ज्ञानामृत

सितम्बर 1983 वर्ष 19 ❋ अंक 3 मूल्य 1.35

2

1 नई-दिल्ली में ब्र० कु० पुष्पा भारत के उपराष्ट्रपति माननीय भ्राता हिदायत्तुल्ला जी को राखी बांधते हुए। ब्र० कु० मृत्युअजय उन्हें आबू में १९८४ में होने वाले विश्व शान्ति सम्मेलन के लिये निमन्त्रण देते हुए।

2 नई दिल्ली में ब्र० कु० चक्रधारी भारत के विदेश मन्त्री भ्राता नरसिंहाराव को स्नेह और पवित्रता की सूचक राखी बांधते हुए। ब्र० कु० जगदीश जी उन्हें ईश्वरीय सन्देश सुना रहे हैं। ब्र० कु० किशनचन्द जी भी चित्र में हैं।

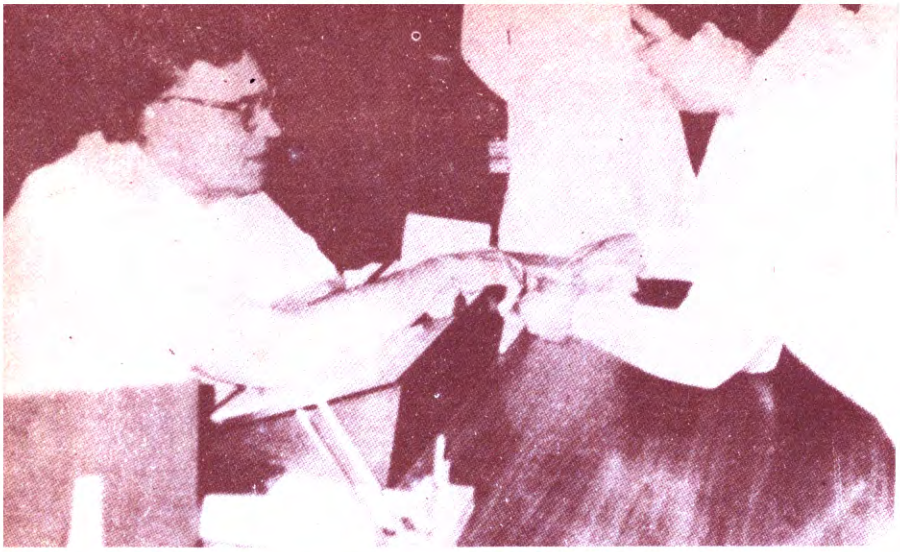

नई दिल्ली में ब्र०कु० पुष्पा भ्राता बलराम जाखर, अध्यक्ष लोकसभा को पवित्रता और स्नेह भरी राखी बांधते हुए

नई दिल्ली में ब्र०कु० चक्रधारी दिल्ली राज्य के उपराज्यपाल भ्राता जगमोहन जी को स्नेह सूचक राखी बांध रही हैं। ब्र० कु० सुन्दरलाल जी, दादा किशनचन्द जी, तथा ब्र० कु० सुधा योग की दृष्टि देते हुए।

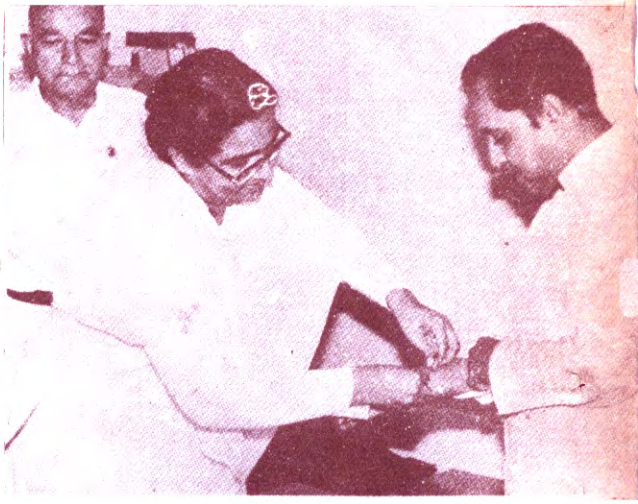

नई दिल्ली में ब्र० कु० चक्रधारी भारत के वित्त मन्त्री भ्राता पर्णव मुकर्जी को राखी बांधते हुए।

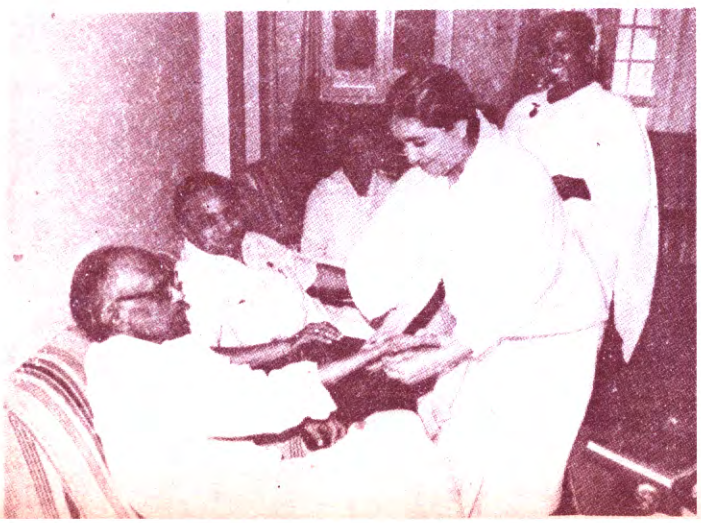

ब्र० कु० इन्द्रा, न्यायाधीश भ्राता के. के. मैथ्यु, अध्यक्ष विधि आयोग को राखी बांधते हुए

आध्यात्मिक सेवा समाचार

ब्र० कु० पुष्पा तथा ब्र० कु० लक्ष्मी बहन मोहिसिना किदवाई, भारत की स्वास्थ्य राजमन्त्री को रक्षाबंधन के शुभ अवसर पर प्रसाद देते हुए

भारत के उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश भ्राता मदान जी को ब्र० कु० चक्रधारी राखी बांधते हुए।

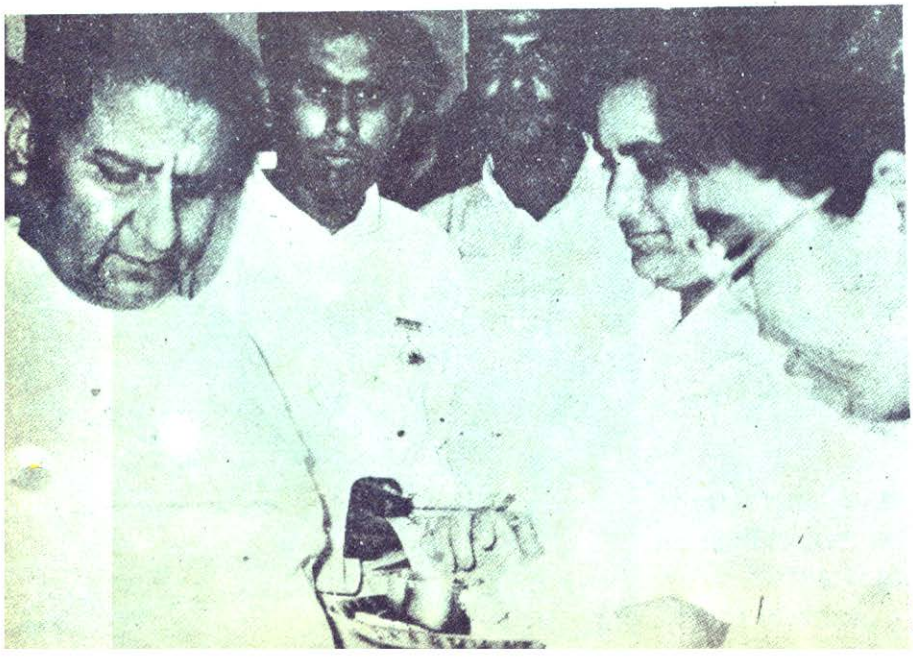

नई-दिल्ली में ब्र० कु० पुष्पा भ्राता कल्पनाथ राय, भारत के संसदीय मामलों के राज्यमन्त्री को रक्षाबन्धन बान्धने के पश्चात् ईश्वरीय सन्देश देते हुए।

Regd. No. 10563/65-D (E)—70

दीदी मनमोहिनी जी के योग गति को प्राप्त होने के पश्चात् 11 अगस्त 1983 को नई दिल्ली में प्यारे लाल भवन में श्रद्धान्जली अर्पित करते हुए ट्रिनिडाड के हाई कमिश्नर। मंच पर (बाएं से) भ्राता प्रभाकर मिश्र जी, भ्राता जसवंत सिंह जी, पूर्व न्यायाधीश सर्वोच्च न्यायालय, ब्र० कु० हृदय मोहिनी जी, ब्र० कु० चक्रधारी जी, ब्र० कु० जगदीश जी, ब्र० कु० आशा तथा अन्य विराजमान हैं।

दिल्ली राज्य के मुख्य कार्यकारी पार्षद ब्र० कु० चक्रधारी जी से पवित्रता की सूचक राखी बन्धवाते हुए। ब्र० कु० रानी तथा सुन्दरलाल साथ में हैं।

ब्र० कु० विमला भ्राता मुर्तजा-फ़ज़ल-अली न्यायाधीश उच्चतम न्यायालय, नई दिल्ली, को पवित्रता सूचक राखी बांधते हुए। ब्र० कु० इन्द्रा तथा भ्राता जय प्रकाश जी साथ में हैं।

ब्र० कु० हृदय मोहिनी, भ्राता टी. वी. आर. टाटाचारी, लोकायुक्त हि० प्र०, को मालविया नगर, नई दिल्ली सेवा केन्द्र पर राखी बांधते हुए।

अमृत-सूची

क्र० सं०	विषय		पृष्ठ	क्र० सं०	विषय		पृष्ठ
१.	अब परमात्मा की योग रूपी अंगुली पकड़ लो	...	१	७.	गीत	...	१७
२.	शुभ भावना और शुभ कामना (सम्पादकीय)	...	२	८.	खुशी के आंसू	...	१८
३.	तन्त्र ज्ञान एवं कुन्डलिनी योग क्या है ? कुन्डलिनी कैसे जगाई जा सकती है ?	...	५	९.	एक दिन जाना है,	...	२०
४.	आध्यात्मिक सेवा समाचार (चित्रों में)	...	९	१०.	सचित्र समाचार	...	२२
५.	बात हल्की, फुल्की परिवर्तन महान	...	१३	११.	वो बून्द सूख जाएगी, अगर उसे सागर न बनाया	...	२७
६.	योग का मानवतावादी और विश्वकल्याणकारी रूप	...	१५	१२.	वे यादें अब भी ताज़ा हैं (कविता)	...	२८
				१३.	भ्राता जगदीश जी की विदेश यात्रा का तिथि-क्रम	...	२०
				१४.	आध्यात्मिक सेवा समाचार	...	३०

अब परमात्मा की योग रूपी अंगुली पकड़ लो

भक्त लोग भगवान् से प्रार्थना करते हुए प्रायः कहते हैं कि –"हे प्रभु ! आप हमें एक अंगुली का सहारा दे दो तो हम इस संसार सागर से या बीचभँवर से पार हो जायेंगे।" परन्तु अब भगवान् मनुष्य मात्र से कहते हैं कि—"हे वत्स, अब आप मुझे अपनी एक अंगुली दे दो तो मैं उसे पकड़ कर आपको समस्याओं की मंझदार के बीच से निकाल कर पार कर दूंगा।"

भगवान् कहते हैं—"वत्सो, हरेक अंगुली के तीन पोटे (भाग) होते हैं। अंगुली का एक भाग इस बात का इशारा देता है कि अब आप मन, वचन, कर्म से पवित्र बनो। अंगुली का दूसरा भाग यह संकेत देता है कि आप मन, बुद्धि और कर्म से ट्रस्टी (Trustee) होकर रहो और अंगुली का तीसरा भाग यह बताता है कि आप अपना तन, मन और धन घर-गृहस्त की आवश्यकतओं को पूरा करने में लगाकर, उनका शेष इस सृष्टि को सुधारने के कार्य में लगाओ। वत्सो, आप यह अंगुली मुझे दे दो तो मैं आपको सभी समस्याओं से पार, सम्पूर्ण सुख-शान्ति की दुनिया में ले चलूंगा। आप दूसरों को अंगुली का इशारा देकर राह दिखाते हो परन्तु अब स्वयं को इस प्रकार अंगुली दिखाकर समास्याओं से पार होने वाले मार्ग पर लगाओ !"

भगवान् कहते हैं—"यदि आप अपनी अंगुली नहीं देना चाहते बल्कि मेरी ही अंगुली पकड़ना चाहते हैं तो मुझ से बुद्धि का योग लगाओ क्योंकि बुद्धियोग अथवा मेरी याद ही मेरी अंगुली है, मेरी कोई स्थूल अंगुली तो होती नहीं है ! वत्सो, पकड़ो मेरी योग रूपी अंगुली को तो मैं आपको अपने परमधाम में अथवा वैकुण्ठ में राज्य-सिंहासन पर ले चलूँ !"

"वत्सो, आप मुझ से पूछते हो कि—"हे प्रभु, अब हम इस परिस्थिति को कैसे पार करें ?" अतः मैंने अब आपको बता दिया है कि आपको क्या करना है। आप या तो अंगुली दे दो और या मेरी योग रूपी अंगुली पकड़ लो तो आप सदा के लिए सुखी हो जायेंगे।"

शुभ भावना और शुभ कामना

आज जो कलियुगी संसार चल रहा है, इसका कार्य-व्यापार प्रायः मुकाबला-बाज़ी, होड़, ईर्ष्या, मन-मुटाव या हाय-दुहाई से ही चल रहा है। किसी वस्तु का एक व्यापारी उसी वस्तु के दूसरे व्यापारी को अपना प्रतिद्वन्द्वी समझता है। एक व्यक्ति किसी बाज़ार में भल्ले पकौड़ी की अच्छी दुकान चलती देखकर स्वयं भी वहां उसी चीज़ की दुकान खोलने की कोशिश करता है। आज का आर्थिक ढाँचा ही ऐसा है कि व्यापारी अपने मुनाफ़े को घटाकर भी, ग्राहक को दूसरे के पास जाने से रोकने के लिए, उसे सस्ते दाम चीज़ देने को तैयार हो जाता है। उसी वस्तु की दूसरी, सामने वाली दुकान का मालिक ग्राहक को देख कर यह सोचता रहता है कि यह दुकानदार ग्राहकों को फुसलाता है। इस प्रकार सारा व्यापार खींचातानी पर आधारित है, एक-दूसरे की खुशी पर नहीं। कपड़े की दुकान पर कोई खरीदार जाता है तो विक्रेता ग्राहक के अच्छे कपड़े और बनाव-शृंगार देखकर, उसे मोटा ग्राहक मानकर झट से मुस्कुराते हुए उसे बैठने के लिए आमन्त्रित करता है और उसके लिए कैम्पा कोला मंगवाता है। वह उससे मीठी-मीठी बातें करता है और जब कपड़े के दस थान देखने पर भी ग्राहक पसन्द नहीं करता तो वह अपने माथे पर त्योड़ी लाये बिना, बड़ी मधुरता और सहन शीलता से उसे और-और नमूने दिखाता जाता है। वास्तव में उसकी यह मुस्कुराहट, मधुरता और सहनशीलता सब बनावटी और अस्थाई होते हैं। वह जो इतने सारे नमूने दिखाता है, उसके पीछे उसका कोई सेवा-भाव नहीं होता, यह तो सब उसकी विक्रय-नीति के दाव पेच हैं। इसमें आध्यात्मिक नैतिकता को प्रायः कोई स्थान नहीं। हाँ, कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो इसका अपवाद हैं, परन्तु ऐसे लोगों की संख्या कलि के इस अन्त में अति न्यन है। अधिकतर व्यापारी तो अधिक-से-अधिक पैसा बनाना चाहते हैं और उनमें स्वार्थ कूट-कूट कर भरा है। वे इसे केवल अपने जीवन-निर्वाह का साधन नहीं मानते बल्कि अपनी कई पीढ़ियों के लिए भी सामान इकट्ठा कर जाना चाहते हैं। इन्होंने अपने मन में यह नहीं निश्चित किया होता कि वे एक रुपये के पीछे कितना पैसा कमायेंगे, उनकी तो यह लालसा रहती है कि मिट्टी बेचें और सोना मिले। इस प्रकार **आज के व्यापार का आधार न तो मानवी प्यार है, न कोई सम्बन्ध का स्नेह है, न उसमें सेवा की कोई रंच मात्र भी पुट है बल्कि जिसे कभी 'उत्तम खेती, मध्यम व्यापार' कहा गया था, अब तो उसका रूप ही बदल गया है।** इसीलिए न तो आज व्यापार में 'बरकत' नाम की कोई चीज़ रही है न 'झूँगा' बल्कि हरेक वस्तु की 'क्वालिटी' (Quality, गुण) भी घटती जा रही है और इसके दाम बढ़ते जा रहे हैं।

आज लेने और देने का आधार शुभ भावना और शुभ कामना नहीं है या सम्बन्ध और स्नेह नहीं है बल्कि केवल सौदा बाज़ी, चुक-चुकाव आदि है। व्यापारी और उद्योगपति सरकार से खुश नहीं क्यों-कि उनके विचार से वह कर (Tax) अधिक लेती है। और खरीदार व्यापारी से इसलिए खुश नहीं कि वह माल घटिया व दाम बढ़िया का लक्ष्य लिये हुए रहता है। गोया आज का सारा सौदा खुशी का सौदा नहीं। प्रायः जब कोई किसी को पैसे देता है, तो वह मन में खुश होकर नहीं देता। कहीं पर लोग रिश्वत के रूप में पैसा ले रहे हैं और देने वाला तंग होकर मजबूरी से कोसता हुआ-सा पैसा देता है चाहे देते हुए बाहर से वह अपनी शान दिखा रहा हो। मिल-मालिक अपने मज़दूरों को पैसे देता है या सरकार अपने कर्मचारियों को वेतन देती है तो वह भी खुश होकर नहीं। वे कहते हैं कि आज के कमचारी कर्म तो कम करते हैं और पैसे अधिक माँगते हैं। कर्मचारी कहते हैं कि आज मालिक अपने मुलाज़िम की हालत

पर तो ध्यान देते नहीं और कम वेतन से काम अधिक कराना चाहते हैं। इस प्रकार, स्नेह के स्थान पर रुपया हर किसी के मन में बैठ गया है। कोई किसी को शुभाशीष नहीं दे रहा बल्कि सब-कुछ मज़बूरी ही से और कुढ़ते-कुढ़ते हो रहा है। यही कारण है कि आज मनुष्य खाता, पीता और पहनता है तो भी उसके मन में सच्ची और स्थाई खुशी नहीं है क्योंकि बहुत-कार्यों के पीछे परेशानी, बददुआ और शाप-जैसी-मनो-भावना है। कोई किसी से इतना खुश नहीं कि उसका मन नाच उठे।

आज अध्यापक कहते हैं कि विद्यार्थी पहले-जैसे नहीं रहे। वे विद्यार्थियों के व्यवहार अथवा उनकी अनुशासनहीनता से तंग हैं। केवल मजबूरी से ही पैसे ही के कारण वे पढ़ा रहे हैं; ताकि विद्यार्थी हड़-ताल न कर दें और स्वयं उन्हें भी वेतन मिलता रहे। विद्यार्थी इस लिए पढ़ते हैं कि उन्हें भी पढ़कर कमाना होता है, अध्यापकों से वैसे खुश वे भी नहीं है जैसे पहले हुआ करते थे क्योंकि दोनों में स्नेह-सम्बन्ध का अभाव है।

गोया आज का जो सामाजिक ढाँचा है, उसमें लेने की भावना अधिक और देने की भावना कम है। और लेने और देने दोनों कर्मों में प्रेम की अनुपस्थिति, निष्ठुरता, रूखापन, स्वार्थपरता भरी हुई है। बुजुर्गों से हम सुनते हैं कि एक ज़माना ऐसा भी था तो जब एक व्यक्ति दूसरे को कोई चीज़ देता भी था तो उससे पैसा लेने का उसका मन नहीं करता था। व्यवसाय होने के कारण वह लेता भी था तो माल अधिक देना चाहता था और पैसा कम लेना चाहता था। विक्रेता खरीददार को कहता था, 'मैं आपसे पैसे नहीं लूँगा, आप और हम कोई अपरिचित थोड़े ही हैं। यह तो घर की जैसी बात है; घर वालों से पैसे थोड़े ही लिये जाते हैं। आप चीज़ ले जाइये; आपके पैसे मेरे पास आ गये -- ऐसे ही मान लीजिए। आप स्वयं जो आ गये, मेरे लिए क्या यह कम खुशी की बात है? गोया प्रेम-सम्बन्ध के कारण वे एक-दूसरे से पैसा लेते-देते भी शरमाते थे और लेने और देने के लिए हाथ बढ़ाना ही उन्हें अखरता था। परंतु आज व्यापारी अपने परिचित लोगों से मुरव्वत ही मुरव्वत में पैसा बना लेते हैं। कहावत मशहूर हो गई है कि बेटा बाप से और बाप बेटे से भी पैसे लेता है। आज तो व्यापारी खुल्लम-खुल्ला कहते हैं कि व्यापार को बात अलग रखिए, सम्बन्ध की बात अलग। उनका कहना भी ठीक है क्योंकि आज सम्बन्ध जतला कर मुफ्त में लेने वाले भी बहुत हैं और चीजें तो महंगी हो ही गई हैं।

बात केवल व्यापारियों की नहीं है, हर धन्धे का यही हाल है और जीवन के हर क्षेत्र में पैसे का सवाल है। हम ऊपर कर्मचारियों, विद्यार्थियों तथा अध्यापकों का उदाहरण दे आये हैं। वस्तु-स्थिति हरेक क्षेत्र की यही है। आज पुत्र-पौत्र, अपने माता-पिता व दादा दादी से आशीर्वाद नहीं, पैसा ही मांगते हैं और माता-पिता भी अपने बच्चों की आदतों से मजबूर हैं; उनके भी पूरे मनोबल से, स्थाई और सच्चा आशी-र्वाद नहीं निकलता बल्कि वह आशीर्वाद भी मजबूरी से ही देते हैं।

सरकारी कर्मचारी जो स्वयं को पहले पब्लिक सर्वेन्ट (Public Servant, सेवक) कहा करते थे, अब वे भी सेवक न होकर अधिकारो के रूप से व्यवहार करते हैं। दूसरों की समस्याओं का हल निकालने की सेवा को अपना कर्त्तव्य समझने की बजाय वे अपनी पैसे की समस्या को हल करना अपना कर्त्तव्य समझते हैं। इसलिए सरकारी कर्मचारी रूपी अधिकारी होने के नाते वे अपनी मुलाज़मत के दिनों में ही अपना मकान बना लेना चाहते हैं और अपना साधन इकट्ठा कर लेना चाहते हैं। इसलिए उन्हें प्रायः यह कहते सुना जाता है कि यह तो सरकारी काम है, चलता ही रहेगा; यह कभी समाप्त थोड़े ही होता है। इस प्रकार वे इसे अपनी सेवा न मानकर सरकार अर्थात् किसी गैर का कार्य मानते हैं। आज भी जब कोई व्यक्ति रिटायर हो जाता है तो कहा जाता है कि वह 'सेवा-निवृत्त' हो गया अथवा उसका सेवा-काल (Duration of Service) समाप्त हो गया है। परन्तु वास्तव में उनमें कोई सेवा व स्नेह का भाव होता नहीं।

सतयुग में समाज का ढाँचा इससे बिल्कुल अलग प्रकार का था। राजा और प्रजा में पिता-पुत्र जैसा व्यवहार था और प्रजा में परस्पर भाई चारे-जैसी

स्थिति थी। तब व्यापार भी एक-दूसरे को नज़राने, उपहार अथवा भेंट देने जैसा था। कोई व्यक्ति किसी वस्तु के बारे में पूछता था तो उसे वह वस्तु चुक-चुका किये बिना दे दी जाती थी। और वह भी कोई अन्य वस्तु किसी समय भेंट या उपहार के रूप में दे देता था। कोई किसी से दुकानदार और खरीदार के नाते नहीं मिलता था न कर्मचारी और मालिक की वहां भावना थी। तब प्रधानता धन की नहीं, भाई-चारे की थी। स्नेह से भरे मन से सभी लोग एक-दूसरे को खुशी से देना ज्यादा पसन्द करते थे और लेने की कामना उनमें व्यक्त नहीं होती थी। दूसरे के पास कोई वस्तु अधिक हो तो लोग उसे देखकर उसका मुकाबला नहीं करते थे न उससे जलते-भुनते थे बल्कि वे अपने मन में यह सोचते थे कि यह अपना प्रिय ही तो है; इसके पास अधिक है तो अच्छा ही तो है। जिसके पास किसी वस्तु का अधिक्य होता था, वह यह सोचता था कि अपने से कम वालों को किस प्रकार भेंट करें। वास्तव में किसी चीज़ का अभाव तो था ही नहीं। ऐसी सभ्यता का मूल आधार यह था कि उसमें खींचातान नहीं थी। हरेक के मन में दूसरे के प्रति शुभ भावना व शुभ कामना स्वाभाविक रूप से बनी रहती थी। कोई भी व्यक्ति किसी अन्य के प्रति कभी अशुभ सोचता ही नहीं था।

आज के ढाँचे को यदि हम बदलना चाहते हैं और फिर से सतयुग-जैसी स्थिति लाना चाहते हैं तो हमें फिर से शुभ भावना और शुभ कामना ही को अपना स्वभाव बनाना होगा। हमें अपने जीवन को इस प्रकार ढालना और मोड़ना होगा कि सबके मन से हमारे लिए मंगल कामना अथवा आशीर्वाद ही की भावना उत्पन्न हो। खींचातानी, कशमकश, कहा-सुनो, मुकाबलाबाज़ी, होड़, पर-पीड़न—इससे ही इस संसार की हालत बिगड़ी है। जिस काम में दूसरे की भी भलाई हो और अपनी भी भलाई हो, वही काम भला हुआ करता है। सबकी भलाई को सामने रखकर कार्य, व्यवहार और आचार को बनाने से फिर सतयुग के दिन लौट आयेंगे, यह दुनिया हरी-भरी हो जाएगी और सबके चेहरों पर खुशी, चमक और उत्साह दिखाई देगा।

आज संसार में करोड़ों लोग भूखे-प्यासे, रोगी, नंगे, अशिक्षित, धन-साधन रहित, पीड़ित, अशान्त हैं। उनके बिलबिलाते या तमतमाते प्रकम्पनों से तो सारे संसार में मायूसी का वातावरण बना हुआ है और यदि कहीं खुशी की झलक दिखाई भी देती है तो वह नाटकीय, बनावटी अथवा क्षणिक ही है। निर्धन लोगों के मन में शुभ भावना की बजाय आक्रोश भरा है और धनवान लोगों के मन में लोभ और लालसा की उठती लहरें थपथपा रही हैं। एक तरफ़ विकारों की अशान्ति और दूसरी तरफ़ अभाव का दुःख इस संसार में व्याप रहा है। यदि आज से लेकर हम एक-दूसरे को आगे बढ़ता देखकर खुश होना सीखें, एक-दूसरे के लिए मन में शुभ भावना और शुभ कामना रखें, परस्पर सम्बन्धों में व्यापार लाने की बजाय स्नेह को मुख्यता दें तो फिर सतयुग के दिन जल्दी लौट आयेंगे। शुभ भावना और शुभ कामना ऐसी जड़ी-बूटी है जो मन की जन्म जन्मान्तर की अशान्ति के रोग को दूर करती है और स्वयं मन की जड़ तक पहुँचकर विकारों रूपी जड़ की बूटियों को निकाल देती है। शान्ति, शान्ति, शान्ति। शुभ, शुभ, शुभ। बस यही हमारी नब्ज़ की चाल हो, यही दिल की धड़कन और यही हमारी श्वास-प्रश्वास क्रिया, यही हमारे कदम-कदम का रिदम (Rhythm, ताल)। इसी में सारे दर्शनों का और सारी नैतिकता का सार समाया है।

—जगदीश

तन्त्र ज्ञान एवं कुन्डलिनी योग क्या है? कुन्डलिनी कैसे जगाई जा सकती है?

पाश्चात्य तथा पूर्वी देशों में आजकल योग सीखने वालों में कुन्डलिनी जगाने की सनक सी है। पिछले ३० वर्षों में जिस प्रकार 'योग' शब्द काफी प्रचलित है, उसी प्रकार 'कुन्डलिनी' तथा 'तन्त्र' शब्द भी काफी विख्यात हो गये हैं। आज बहुत से लोग कुन्डलिनी को जगाने के उद्देश्य से ही योग सीखते हैं। योगी से वे पहला प्रश्न यही पूछते हैं कि "क्या आप बता सकते हैं कि हमारी कुन्डलिनी कैसे जगाई जा सकती है?"

कुन्डलिनी क्या है और यह कैसे जगाई जा सकती है? तन्त्र क्या है और वास्तव में 'तन्त्र-ज्ञान' क्या है? इन प्रश्नों पर विचार करने से पहले हमें यह ध्यान में रखना होगा कि हरेक योग दर्शन का यह मौलिक सिद्धांत है कि हरेक आत्मा में कुछ विशेष निश्चित गुण होते हैं जो शिथिल अवस्था में रहते हैं और योग एक साधन है या अभ्यास है जिससे साधक मन को अनुशासित करके या कर्म-इन्द्रियों को नियंत्रण करके उन दिव्य विशेषताओं या गुणों को अपने अन्दर स्पष्ट रूप में ले आता है। इसलिए राजयोग या बुद्धि-योग का लक्ष्य अपने स्वयं के अन्दर की दिव्यता को बाहर प्रकट करना है। कुन्डलिनी योग या तन्त्र ज्ञान का भी लक्ष्य आत्मा की शिथिल शक्तियों को प्रकट करना ही है। जिस प्रकार एक बड़े वृक्ष के विकास के मूल तत्व छोटे से बीज में समाए होते हैं, उसी प्रकार शान्ति, पवित्रता तथा सम्पूर्णता से सम्पन्न एक दिव्य मनुष्य या देवता के विकास के भी मूल तत्त्व आत्मा में ही होते हैं। उन्हें केवल जगाने की बात है।

तन्त्र क्या है?

तन्त्र शब्द का अर्थ है, राज्य करने के लिए नियम। उदाहरण के लिए जब हम प्रजा-तन्त्र की बात करते हैं तो हमारा भाव डेमोक्रेसी से होता है अर्थात् एक प्रकार की सत्ता जो लोगों (प्रजा) के लिए, लोगों की तथा लोगों द्वारा बनाई जाती है। इसी प्रकार जब हम शासन-तन्त्र की बात करते हैं, तब भी हम एक प्रकार की सत्ता या 'राज्य के संविधान' की बात करते हैं।

तन्त्र साहित्य में परमात्मा को शिव कहा गया है, जैसे पाताञ्जली योग में परमात्मा को 'ईश्वर' और भागवद् गीता में उसे 'परम पुरुष' परमात्मा या भगवान कहा गया है। तान्त्रिक लोगों का यह कहना है कि उनका अन्तिम लक्ष्य शक्ति को शिव के साथ जोड़ना है। उनका विचार है कि शक्ति, 'संसार की दैवी माँ' (जननी) है।

कुन्डलिनी क्या है?

इस संदर्भ में यह जानना आवश्यक है कि पुरातन ऋषि मुनि लाक्षणिक या आलंकारिक भाषा में सोचते या बात करते थे। उदाहरणार्थ, मन की उपमा वे एक घोड़े के साथ करते थे जिसे लगाम से संभालना होता था। वे मन की तुलना एक हाथी से भी करते थे जिसे त्रिशूल के द्वारा नियंत्रण में रखना होता था। आत्मा व शरीर के सम्बन्ध को वे 'रथी' और 'रथ' की उपमा देते थे। उन्होंने आध्यात्मिकता के लिए त्याग की तुलना अग्नि में आहुति डालने से की। इसी प्रकार, उन्होंने शिथिल आध्यात्मिक शक्ति की 'कुन्डलिनी' शक्ति से तुलना की जैसे पश्चिम के लोग एक बलवान परंतु सुस्त व्यक्ति या देश को 'सोया हुआ देव' कहते हैं। कुन्डलिनी का शाब्दिक अर्थ है 'चक्कर में लिपटा हुआ'। कुन्डलिनी या कुन्डलिनी शक्ति का अर्थ है शिथिल शक्ति जैसे कि एक सर्प चक्कर में लिपटा हुआ बैठा होता है। हम जानते हैं कि जब एक सर्प विश्राम या आलस्य की स्थिति में होता है तो वह एक चक्कर में लिपट कर बैठ जाता है। भारत में, जब कोई मदारी अपनी कला दिखाने के लिए किसी गांव में सर्प लाता है या तो वह सर्प विश्राम

की स्थिति में या तो उस व्यक्ति के गले में या बांस की टोकरी में लिपटा हुआ बैठा होता है। कभी तो यह सर्प उंगली चुभोने पर भी उसी शिथिल अवस्था में रहता है मानों कि वह मरा हुआ हो, यद्यपि वह मरा हुआ नहीं होता। मदारी के बीन बजाए जाने पर वही सर्प जाग उठता है और यहां तक कि बीन पर मुग्ध होकर वह झूमता हुआ नाचता है। इसी प्रकार यह जानना आवश्यक है कि कुन्डलिनी शक्ति शब्द जिसका अनुवाद 'सर्प शक्ति' में किया गया है, वह केवल आलंकारिक या लाक्षणिक भाषा है। वैज्ञानिक परिभाषा में इसे 'शक्ति' कहा जा सकता है।

परन्तु खेद का विषय है कि कुन्डलिनी शक्ति का सर्प-शक्ति में जो अनुवाद किया गया है या इसे लिपटे हुए सर्प का उदाहरण देकर स्पष्ट किया गया है, इस से भ्रान्ति उत्पन्न हो गई है जिसे दूर करना कठिन हो गया है। जिन लोगों ने इस लाक्षणिक शब्द का शब्दानुसार अर्थ लिया है, उन्होंने इसका गलत अर्थ समझा है। उनमें से कुछ लोगों का विचार है कि वास्तव में पीठ की रीढ़ में सर्प के समान कोई अपूर्व सूक्ष्म शक्ति शिथिल रूप में होती है जिसे जगाना उतना ही खतरनाक है जैसे एक सर्प को जगाना। वे इसका भाव परियों की कहानी में एक सोये हुए दानव से लेते हैं। यहाँ यह बताना आवश्यक है कि रीढ़ में ऐसी कोई सूक्ष्म, सर्प समान अचेत शक्ति नहीं होती, बल्कि इस सब का आलंकारिक अर्थ है। यह केवल आत्मा की आंतरिक शक्तियों का सूचक है।

शिव, शक्ति और इनका मिलन

इसी प्रकार 'शिव', 'शक्ति' और 'मिलन' इन शब्दों का भी गलत अर्थ लिया गया है। बहुत से लोगों को यह ज्ञान नहीं है कि शिव कौन है, शक्ति कौन है और मिलन (सम्बन्ध का अर्थ क्या है)। वास्तव में 'शिव' परमात्मा का गुण सूचक नाम है जिन्होंने भूत-काल में गहरे नैतिक एवं आत्मिक संकट कालीन समय पर आत्माओं को शक्ति का वरदान दिया। उस कल्याणकारी परमात्मा ने आत्माओं को कर्मेन्द्रियों को नियंत्रण करने को, मन के विचारों को नियन्त्रण करने और ऐसी अनेक शाक्तियां प्रदान की जिससे आत्माएं शक्ति स्वरूप बनीं या उनके अन्दर शक्तियां जागृत हुईं जिसके फलस्वरूप उन आत्माओं ने परमात्मा के साथ मानसिक सम्बन्ध जोड़ा लेकिन, बाद में तांत्रिक लोगों ने इसे गलत समझ लिया। इसका विकृत रूप हो गया जिसे वाम मार्ग कहा जाता है। लोगों ने मदिरा पान करना और विलासिता का जीवन आरंभ कर दिया। कितने खेद की बात है कि वे आध्यात्मिक शक्ति के मार्ग से हट कर ऐसे कुमार्ग पर चल पड़े जिससे आत्मा पतित हुई, दूषित और अधोपतन को प्राप्त हुई। आत्म-स्थिति में स्थित होने और अपने मन को परमात्मा से जोड़ने के बजाए, वे बिल्कुल देह अभिमानी बन गए।

अलंकारों का यथार्थ अर्थ

देह अभिमान के कारण, योगाभ्यास तथा कुन्डलिनी के जगाने को स्थूल अभ्यास तथा कुछ नाड़ी-केन्द्रों के जगाने के साथ मिला दिया गया। हम इस महत्त्वपूर्ण बिन्दु को विस्तार पूर्वक स्पष्ट करेंगे।

चक्र या कमल

प्राचीन काल में आध्यात्मिक शक्तियों या मनुष्य के श्रेष्ठ गुणों के प्रकट होने का सूचक कमल का खिला हुआ फूल माना जाता था। इसके तीन कारण थे। एक कारण यह था कि कमल पुष्प कीचड़ के पानी में रहते हुए भी उससे ऊपर निर्लिप्त रहता है। यह इस बात का सूचक है कि जब मनुष्य योगाभ्यास करता है और उसकी आध्यात्मिक शक्तियां जागृत हो जाती हैं, उसका जीवन पापों और विकारों के कारण मलीन नहीं होता और ऐसे वातावरण में भी वह निर्लिप्त रहता है और पारिवारिक जीवन व्यतीत करते हुए भी वह देह और देह के सम्बन्धियों से अनासक्त रहता है।

कमल पुष्प से आध्यात्मिक शक्तियों की जागृति की तुलना का दूसरा कारण यह है कि खिलने के बाद कमल काफी समय तक अपने डंठल पर ताजा खड़ा रहता है। इसी प्रकार जब एक योगी की आध्यात्मिक शक्तियां योगाभ्यास के द्वारा जागृत हो जाती हैं तो वह युगों तक हर्षित व सन्तुष्ट रहता है और उसका मनोबल कायम रहता है।

तीसरी बात यह है कि हर सुबह जब सूर्य उदय

होता है तो कमल अपने डंठल पर सीधा हो जाता है। और धीरे-धीरे बड़ी सुन्दरता से उसका विकास होता जाता है। लेकिन, जैसे ही सांयकाल होता है और सूर्य आँखों से ओझल हो जाता है तो कमल बंद होकर झुक जाता है। यह इस तथ्य का सूचक है कि द्वापर युग एवं कलियुग के अन्त में मनुष्यात्मा दुःख, अशांति और निराशा में अति दुर्बल हो जाती है, परंतु जब ज्ञान सूर्य परमात्मा संसार में उदय होता है तो आत्माएं नैतिक एवं आध्यात्मिक दृष्टिकोण से प्रबल हो जाती हैं और फूल की तरह उनके गुणों एवं शक्तियों का पूरा विकास हो जाता है।

परंतु यह भाग्य की विडम्बना है कि उपरोक्त आध्यात्मिक रहस्यों का स्थूल भाव ले लिया गया है। ऐसा समझा जाता है कि शरीर में स्थूल रूप से कुछ चक्र होते हैं और हरेक चक्र एक कमल पुष्प के समान होता है जिसकी निश्चित पंखुड़िया होती हैं जबकि वास्तव में ये पत्तियाँ जागृति शक्ति की सूचक हैं।

हमारा शरीर-विज्ञान का ज्ञान शरीर में रीढ़ के महत्त्व पर प्रकाश डाल सकता है। हमारे शरीर के सर्व अंग, परोक्ष या अपरोक्ष रीति से रीढ़ में बन्द अनेक महीन रस्सियों से बंधे होते हैं। हमारी मस्तिष्क सम्बन्धी नाड़ियों के मार्ग भी रीढ़ से होते हैं। रीढ़ का एक मत्त्हवपूर्ण कार्य यह है कि यह हमारे शरीर के समस्त ढांचे को सहारा देती हैं, इसका ऊपरी सिरा खोपड़ी को थमाए रखता है तथा बीच का सिरा हमारे शरीर के मध्य भाग को संभाले रखता है। एक व्यक्ति जो उदास, खिन्न एवं निराश है या जिनका उमंग व उल्लास समाप्त हो गया है, या जो बहुत वृद्ध हो गया है, उसकी रीढ़ की हड्डी भी झुक जाती है। इसके विपरीत एक व्यक्ति जो कि चुस्त, और उत्साहित है, उसकी रीढ़ की हड्डी भी बिल्कुल सीधी रहती है। इस प्रकार यह रीढ़ की हड्डी हमारे उमंग, मूड व हमारी मानसिक स्थिति की सूचक है। इसका सीधापन शक्ति, हिम्मत एवं मजबूत मनोबल की निशानी है। एक व्यक्ति जो हतोत्साहित हो गया है और जिसका मनोबल एवं उमंग समाप्त हो गया है, उसके विषय में यह कहा जाता है कि इसकी कमर या रीढ़ टूट गई है। इसी प्रकार चक्र या कमल केवल अलंकारिक हैं। वे हमारी आध्यात्मिक उन्नति एवं पवित्रता की स्थिति की ओर संकेत करते हैं।

ईडा, पिंगला एवं सुषम्मना

हठ योग एवं वर्तमान समय प्रचलित कुन्डलिनी योग के अनुसार, रीढ़ में तीन मुख्य शक्ति-मार्ग स्थित होते हैं जिन्हें ईडा, पिंगला और सुषम्मना कहा जाता है। ये शरीर में शक्ति के ८ केन्द्रों से जुड़े हुए समझे गए हैं, ये केन्द्र चक्र कहलाते हैं।

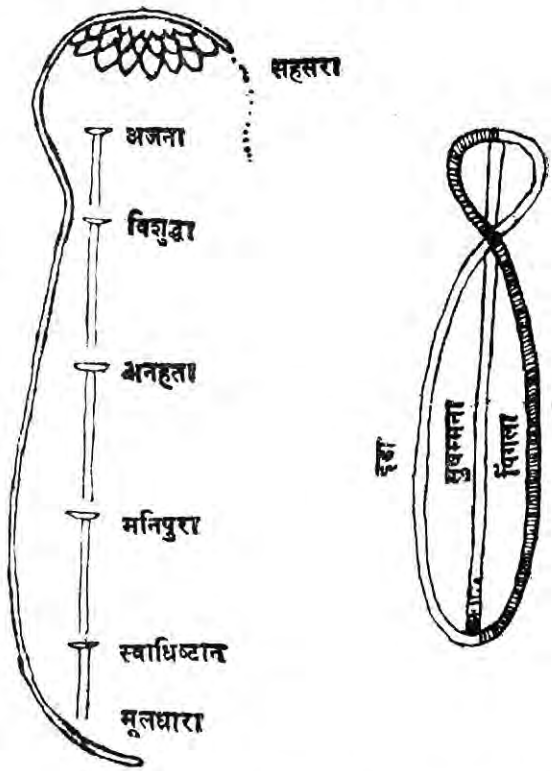

कुछ आधुनिक लेखकों ने रीढ़ में स्थित नालियों को सहानुभूति का नाड़ी मण्डल माना है। उनका कहना है कि दृढ़ योग या तांत्रिक योग के अनुसार ये चक्र शरीर में नाड़ी केन्द्र हैं, जैसे कि ऐकुपंकचर (Acupuncture) की चीनी पद्धति ने शरीर में कुछ शक्ति के मार्ग एवं केन्द्र मालूम किए हैं। परंतु वास्तव में ये चक्र एवं नाड़ियाँ—ईडा, पिंगला और सुषम्मना किसी स्थूल ढाँचे के साथ नहीं मिलाई जा सकतीं। चित्रों में इन चक्रों को अनेक पत्तियों से कमल के रूप में

दर्शाया गया है जो कि कुछ काल्पनिक लगता है। कमल की पत्तियों की बढ़ोतरी वास्तव में दिव्यता की शक्ति की सूचक है। इसका अभिप्राय यह नहीं है कि शरीर में नाड़ियों या तंतुओं का जाल नहीं है, परंतु यह इस तथ्य को स्पष्ट करने के लिए है कि योगियों की भाषा में ये जो चक्र हैं जिन्हें कमल के रूप में दिखाया गया है वास्तव में आध्यात्मिक शक्ति की जागृति किस अंश तक हुई है, यह उसका सूचक है। निम्नलिखित व्याख्या से इसका स्पष्टीकरण हो जाएगा। निस्संदेह शरीर में कोई अप्रत्यक्ष आत्मिक या शारीरिक शक्ति होती है और अनेक नाड़ियों का जाल इससे जुड़ा हुआ हो सकता है परन्तु योगाभ्यास अप्रत्यक्ष आध्यात्मिक शक्तियों को जगाने के साथ है जिसके परिणाम स्वरूप छिपी हुई शारीरिक व मानसिक शक्तियां भी जग जाती हैं।

विभिन्न चक्रों का आध्यात्मिक महत्व

पहला चक्र 'मूल धारा' कहलाता है। इसे मलद्वार के ऊपर और जननेन्द्रिय के नीचे एक अग्नि त्रिकोण के रूप में दिखाया जाता है। इस त्रिकोण में एक प्रकाशमय लिंग दिखाया जाता है जिसे 'स्वयंभू' या 'स्वयंभूलिंग' कहा जाता है! कुन्डलिनी को इस लिंग के ऊपरी भाग पर स्थित दिखाते हैं। स्पष्ट है ये केवल अलंकार है। इस विशेष स्थान पर अग्नि त्रिकोण यह सिद्ध करता है कि आत्मा तीन प्रकार के ताप अर्थात् शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक कष्टों में उलझी हुई है क्योंकि यह विकारों की अग्नि में जल रही है जिसमें काम विकार प्रमुख है। आत्मा स्वयंभू (स्वयं पैदा हुआ) लिंग का सूचक है क्योंकि आत्मा का जन्म नहीं होता। आत्मा कामाग्नि, क्रोधाग्नि और ईर्ष्या की अग्नि में जल रही है जिनमें मूल रूप से कामाग्नि है। यह आत्मा की नीच कोटि (निम्नतम) स्थिति का सूचक है अर्थात् दिव्यता या कुन्डलिनी शक्ति सोई हुई अवस्था में है। इसलिए कुन्डलिनी को यहाँ लिपटा हुआ दिखाते हैं।

ऐसा विश्वास किया जाता है कि जब कुन्डलिनी जग जाती है तो मनुष्य की आध्यात्मिक उन्नति सहज हो जाती है। उसे इस दिशा में कठिन परिश्रम नहीं करना पड़ता। अतः इसका मूलभाव यह है कि जब मनुष्य अपवित्र, मलिनतापूर्ण अवगुणों पर विजय प्राप्त कर लेता है और स्वयं को शान्ति पूर्ण आत्म-स्वरूप में स्थित कर लेता है तब यह आत्मस्थिति उसके अन्दर वास्तविक जागृति लाती हैं और उसकी शक्तियाँ बढ़ती जाती हैं। उसका जीवन चढ़ती कला का जीवन बन जाता है।

कुन्डलिनी की जागृति

तन्त्र योग के अभ्यास में मनुष्य को एक मन्त्र का जाप करने को कहा जाता है और यह कल्पना करने को कहा जाता है कि उसकी रीढ़ के निचले सिरे से दिमाग के उपरी भाग के केन्द्रों तक एक रोशनी से भरपूर एक नाली चल रही है। उसे यह अनुभूति करने को कहा जाता है कि इस अभ्यास से उस नाली के नीचे वाले भाग का मार्ग बिल्कुल साफ हो गया है और इसके अन्दर लगातार आध्यात्मिक शक्ति नदी के समान बह रही है और उस शक्ति के तेज बहाव से कुन्डलिनी जागृत हो गई है जोकि शान्ति प्रदायक सूक्षम ज्योति में परिवर्तित हो गई है। तांत्रिक योग की पुस्तकों में ऐसा बताया जाता है कि इस योग के अभ्यास से यह ज्योति ऊपर ही ऊपर एक चक्र से दूसरे चक्र में या एक कमल से दूसरे कमल में पहुंच जाएगी।

जैसा हम पहले बता चुके हैं कि ये चक्र या कमल कोई स्थूल या व्यक्त चीजें नहीं हैं। सम्पूर्णता तक पहुंचने की यात्रा में आत्मा के लिए ये विभिन्न स्थितियां हैं। अतः ये हमारे बोध व चेतना के भिन्न-भिन्न स्तर हैं जैसा कि इनके नामों से भी पता चलता है। पहला मूलधार इस का अर्थ है मूल पात्र (बर्तन)। चित्रों में इसे गुदा और रीढ़ की सबसे नीचे की तिकोनी हड्डी के या मल एवं मूत्र के स्थानों के समीप दिखाया जाता है। इसलिए यह पिछले तमोगुणी विकारी संस्कारों का सूचक है और विकारों की वर्तमान अवस्था है जहाँ से साधक अपना अभ्यास प्रारम्भ करता है। व्यक्ति को 'शूद्र की' या गिरी हुई अवस्था से ऊंचा उठना है, जब उसके अन्दर जागृति आती है तो उसकी मानसिक स्थिति विकारी संस्कारों से ऊपर उठती है। वह अपने आसुरी संस्कारों पर नियंत्रण करना आरंभ कर देता है। **(शेष पृष्ठ २५ पर)**

इंदौर सेवाकेन्द्र की ओर से स्कूल एवं कालेजों में पढ़ने वाली छात्राओं हेतु बनाए गए छात्रावास का शिक्षाशास्त्री भ्राता लक्ष्मीनारायण ओंकार जोशी जी दीप प्रज्वलित करके उद्घाटन करते हुए। उनके दायीं ओर ब्र० कु० ओमप्रकाश जी तथा उनके बायीं ओर क्रमशः ब्र० कु० आशा, ब्र०कु० सरोज, ब्र० कु० आरती दिखाई दे रहे हैं।

बम्बई के बोरीविली सेवाकेन्द्र के द्वारा भयान्दर में नए राजयोग सेवा-केन्द्र का उद्घाटन करते हुए ब्र० कु० शीलइन्द्रा जी।

धार में आयोजित 'विश्व नव निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी' का उद्घाटन विक्रम ज्ञान मंदिर के अध्यक्ष एवं प्रसिद्ध समाजसेवी माननीय कृष्णलाल शर्मा जी दीप जलाकर कर रहे हैं। उनके साथ ब्र० कु० आशा एवं अन्य भाई बहिन खड़े हैं।

बम्बई में इन्डो-सोवियत कलचरल सोसायटी की ओर से आयोजित सम्मेलन में "भारत और रूस में काम करने वाली महिलाओं का स्थान" इस विषय पर ब्र० कु० बहनों को बोलने का निमन्त्रण मिला। मुलन्द (बम्बई) सेवा केन्द्र की ब्र० कु० लाजवंती (मंच पर दाएं से दूसरे स्थान पर) ने इसमें भाग लिया।

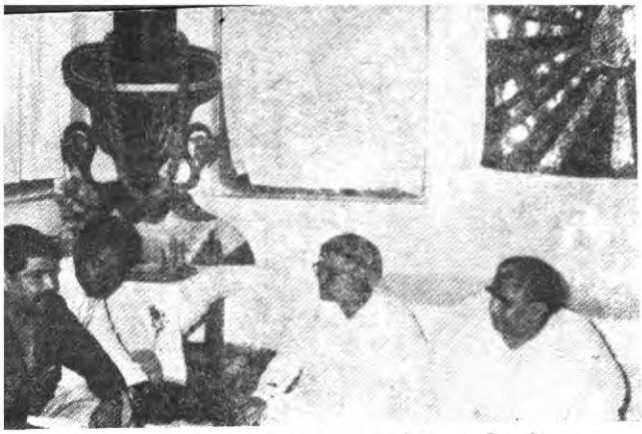

भुवनेश्वर सेवाकेन्द्र पर आयोजित प्रैस कान्फ्रैंस में चार संवाददाता उपस्थित हुए—भ्राता प्रदोष कुमार पटनायक दी समाज, भ्राता आर० एन० मोहन्ती दी प्रजातन्त्र, भ्राता दिलीप कुमार मोहन्ती दी हिन्दुस्तान समाचार, भ्राता अजीत कुमार मोहन्ती दी धारीतोरी।

बिलासपुर सेवाकेन्द्र की ओर से रेलवे-कालोनी में लगी "सुख-शान्ति प्रदायक आध्यात्मिक प्रदर्शनी" का उद्घाटन दीप प्रज्वलित कर, करते हुए द० पू० रेलवे के डी० आर० एम० भ्राता रमेशचन्द्र सक्सेना जी। उनके दाईं ओर ब्र० कु० ममता एवं अन्य भाई-बहिन खड़े हैं।

कोननगर राजयोग सेवाकेन्द्र द्वारा महेश के राधा कृष्ण मन्दिर में आयोजित आध्यामिक प्रदर्शनी में ब्र० कु० सौभाग्या, महेश हायर सैकेंडरी स्कूल के मुख्याध्यापक भ्राता कालीनाथ सरकार को चित्रों पर व्याख्या करते हुए। साथ में ब्र० कु० अयन्ना, ब्र० कु० नारायणन और ब्र० कु० बलेश्वर जी खड़े हैं।

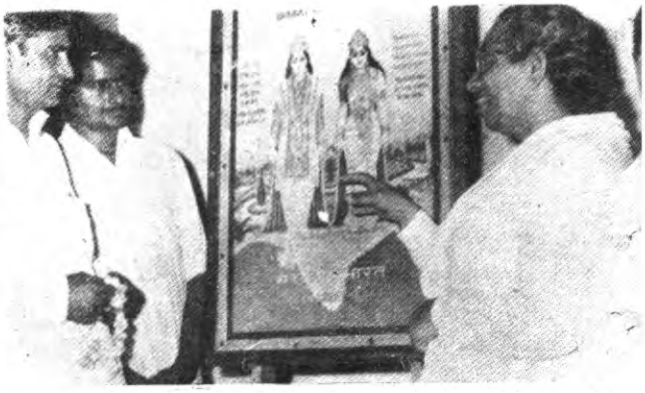

शालीमार बाग सेवाकेन्द्र की ओर से शालीमार गांव में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी में ब्र० कु० राज बहन चित्रों की व्याख्या कर रही हैं, हैदरपुर गांव व शालीमार गाँव के प्रधान चित्र समझ रहे हैं। ब्र० कु० पुष्पा बहिन साथ में हैं।

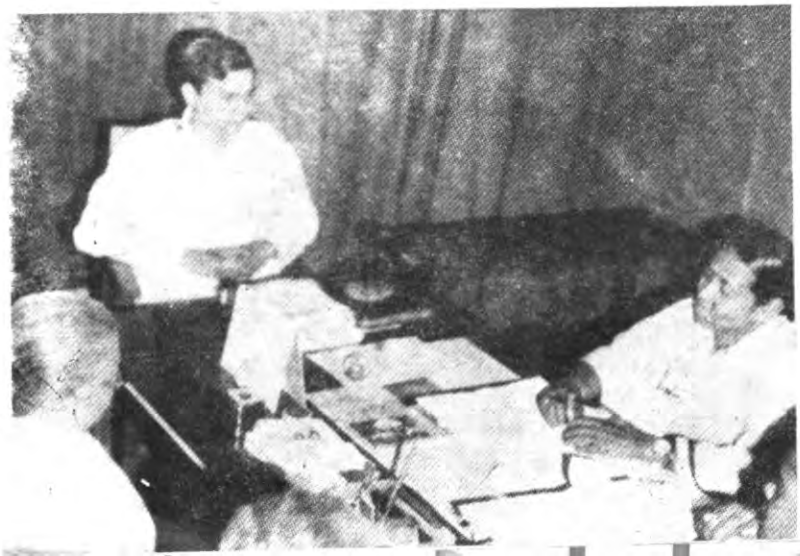

भुवनेश्वर सेवाकेन्द्र पर ब्र० कु० अंगूर उड़ीसा की उपमन्त्री बहिन सरस्वती हेमबर्म को "परमात्मा सर्वव्यापी नहीं है" के बारे में व्यख्या करते हुए। पास में ब्र० कु० सन्देशी तथा ब्र० कु० विजय बैठे हैं।

सिरसा जेल में कैदियों को ईश्वरीय संदेश दिया गया और उनसे बुराइयां छोड़ने के लिए प्रतिज्ञा कराई गई। चित्र में कैदी ध्यानपूर्वक प्रवचन सुनते हुए।

कटनी में राजयोग शिविर के उद्घाटन के अवसर पर म० प्र० सेवाकेन्द्रों के प्रमुख भ्राता ओमप्रकाश जी सम्बोधित करते हुए। साथ में ब्र० कु० किरण एवं ब्र० कु० कमल बहिन बैठे हैं।

कुंदापुर में आयोजित "विदेश यात्रा का अनुभव" समारोह में ब्र० कु० लक्ष्मी जी प्रवचन करते हुए। साथ में मडतरे मंजप्य शेट्टी, डा० वेंकटरमणप्य और ब्र० कु० करुणा जी तथा अन्य भाई बहिन बैठे हैं।

लक्ष्मीनगर में चरित्रनिर्माण राजयोग प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए नगर निगम के सदस्य भ्राता रामचन्द्र नेगी। साथ में ब्र० कु० कमलमणि जी, ब्र० कु० पुष्पा जी, ब्र० कु० जागरूप जी तथा अन्य भाई-बहिन खड़े हैं।

बार्सी उपसेवाकेन्द्र के उद्घाटन समारोह के अवसर पर चित्र में प्रवचन करते हुए बहिन प्रभाताई झाडबुके। बाएं से दाएं बैठे हैं ब्र० कु० महानंदा, ब्र० कु० सोमप्रभा, भ्राता बाबूराव नरके एम० एल० ए०, ब्र० कु० विनायक।

भावनगर सेवाकेन्द्र द्वारा बड़वा विस्तार में आयोजित "प्रभुमिलन प्रदर्शनी" के समाप्ति समारोह में वहां के सनातन धर्म हाईस्कूल के प्रिंसिपल प्रवचन करते हुए, साथ में सामाजिक कार्यकर्त्ता गीजुभाई जोशी जी, ब्र० कु० गीता जी तथा अन्य भाई बैठें।

बरनाला में ब्र० कु० कमला नगरपालिका के ई० ओ० को प्रदर्शनी के चित्रों की समझानी देते हुए।

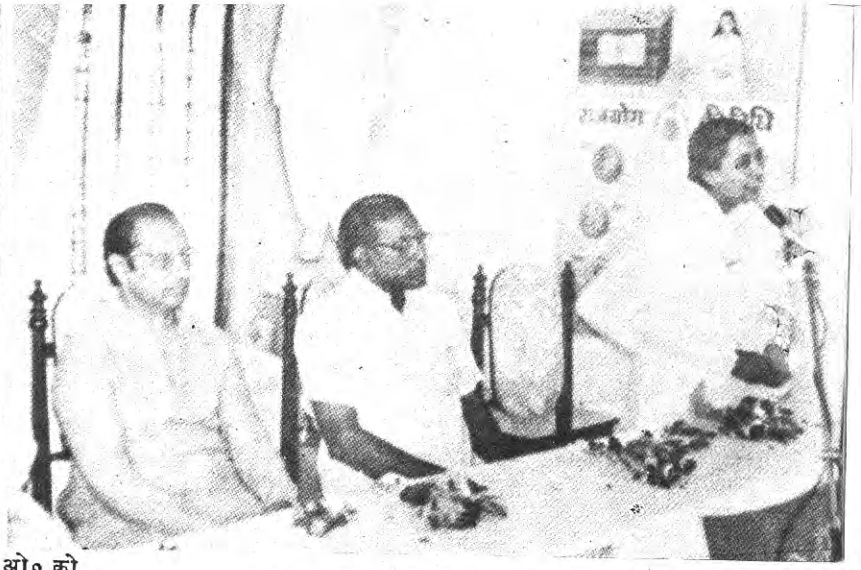

नारायणपुरा (अहमदाबाद) में आध्यात्मिक होस्टल के तृतीय वार्षिकोत्सव पर ब्र० कु० चन्द्रिका जी तथा मुख्य अतिथि जनता का स्वागत करते हुए। पास में बैठे हैं कनुमाईशाह तथा के० एस शास्त्री जी।

माउंट आबू में युनिववर्सल पीस हाल के मंच पर ब्र० कु० नलिनि जी होवनहार शिक्षिकाओं को शपथ दिलाते हुए।

आध्यात्मिक सेवा समाचार

बेलगाम में "राजयोग द्वारा आध्यात्मिक अनुभव" समारोह आयोजित किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि भ्राता विठ्ठल राव, एग्जेक्यूटिव इंजीनियर उपस्थित हुए।

बात हल्की फुल्की, परिवर्तन महान

ब्र० कु० चक्रधारी, देहली

प्यारे बच्चो, इस बार हम आपको बताएंगे कि कैसे जीवन में कभी-कभी कोई छोटी सी घटना या एक-दो वाक्य भी जीवन को मोड़ देते हैं।

आप ने शायद पहले सुना भी होगा कि औरंगज़ेब के दरबार में एक मान्य व्यक्ति थे दीवान वली राम। उनके बारे में बताया गया है कि एक बार दरबार में सभी दरबारी औरंगज़ेब के स्वागत में खड़े थे। दीवान वली राम भी उनमें थे। औरंगज़ेब बैठ गए और उन्होंने किसी काम से दीवान साहब को अपने निकट बुलाया। तब अचानक एक तैतया दीवान साहब के पाजामे में घुस गया और उन्हें काटने लगा परन्तु शिष्टाचार के नाते वलीराम वहीं खड़े रहे। उन्होंने कोई भी हलचल नहीं की। तैतया ने दीवान साहब को बुरी तरह काटा था। वहाँ से हटने के बाद दीवान साहब को अपनी मजबूरी पर बड़ा अफ़सोस हुआ। उन्होंने सोचा कि यह भी क्या नौकरी है कि सम्मान तो मिलता है, धन भी मिलता है परन्तु मनुष्य को एक प्रकार से गुलामी भी करनी पड़ती है। उन्होंने अपने मन से कहा, "अगर मैं इतनी गुलामी, साधना और सहनशीलता भगवान के पथ पर करता तो काफी आगे निकल जाता। उसके मन को ठोकर लगी और दीवान साहब सब छोड़-छाड़ कर नदी किनारे जाकर, साधना में लग गए।

कहते हैं कि औरंगज़ेब ने दीवान साहब की खोज करने के लिए आज्ञा दी। आखिर उन्हें समाचार दिया गया कि दीवान साहब ने सन्यास कर लिया है और वे नदी के किनारे साधना करते हैं या पाओं पसारे रहते हैं।

औरंगज़ेब के मन में प्रश्न उठा कि दीवान साहब को आखिर क्या मिला है कि वे इतने बड़े पद को छोड़ कर चले गये हैं। क्या उन्हें किसी ने उससे ऊँचा पद तथा अधिक वेतन दिया है या क्या कारण बना कि वे सब छोड़-छाड़ कर चले गये।

औरंगज़ेब एक बार स्वयं वहाँ गये। उन्होंने देखा कि दीवान साहिब वहाँ पाँव पसारे पड़े हैं। औरंगज़ेब को वहाँ अपने सामने आया देख कर भी वली राम गुलामों की तरह पेश नहीं आये परन्तु प्रेम से मिले। औरंगज़ेब ने यह परिवर्तन देख कर कहा—"वली राम, कब से पाँवों को पसारे हो ?"

वली राम ने उत्तर दिया—"जब से प्रभु की सेवा में उपस्थित हूँ।"

औरंगज़ेब इस उत्तर से सारी बात समझ कर वहाँ से चले गये।

इधर वली राम ने सोचा कि थोड़े दिन भगवान का बनने से औरंगज़ेब स्वयं मेरे पास आये हैं, अब यदि मैं स्थायी रूप से भगवान की सेवा में उपस्थित हो जाऊँ, तब तो मेरा कल्याण ही हो जाएगा। इस प्रकार, तैतया काटने की एक छोटी सी घटना ने उनके जीवन में भारी परिवर्तन कर दिया।

इसी प्रकार बताते हैं कि बहुत पहले एक बार मथुरा के राजा बाबू, यमुना नदी के किनारे घूम रहे थे। रात्री का समय था। तब नाव के मल्लाह ने ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ लगाकर कहा—"पार जाना चाहने वालों, आ जाओ, नाव में सवार हो जाओ, वरना मैं नाव लेकर जा रहा हूँ।"

उसने जब दो-तीन बार ऐसे आवाज़ें लगाईं तो राजा बाबू जो उस दिन गम्भीर-चित्त थे, सुन कर कुछ सोचने लगे। नावक के पास जाकर कहने लगे

"मुझे पार जाना है, मुझे ले चलो।"

राजा को देखकर नावक आश्चर्यचकित हो गया बोला—"महाराज, आप! आप कहाँ जायेंगे? आइए बैठिए।" राजा बाबू नाव में बैठ गये और नाविक नाव चला कर वृन्दावन जा पहुँचा। राजा वहाँ उत्तर कर साधना करने लगे और फिर वापिस मथुरा लौटे ही नहीं।

इस प्रकार "पार जाने की इच्छा वालों, नाव में बैठ जाओ।" इस वाक्य ने उनके जीवन को पलट दिया। उन्होंने इस का आध्यात्मिक अर्थ ले लिया।

इसी प्रकार, कहते हैं कि छज्जू भक्त, भक्ति किया करता था परन्तु भक्ति में उसे प्रगति प्राप्त नहीं हो रही थी। एक बार वह गली में जा रहा था कि पीछे से एक भगंन सिर पर गन्दगी उठाये आ रही थी। वह छज्जू भक्त को जानती थी। उसने पीछे से आवाज़ लगाई—"छज्जू भक्त, एक तरफ हो जाओ। छज्जू-भक्त के मन में यह बात लग गई। तब से वे एक तरफ ही लग गये, अर्थात रात-दिन परमपिता परमात्मा ही की याद में रहने लगे।

इस प्रकार, कई दृष्टान्त दिये जा सकते हैं जिनसे स्पष्ट होता है कि अगर मनुष्य किसी वृत्तान्त या वाक्य को अपने ऊपर घटा कर, उससे गुण ग्रहण करे तो उसका काया पलट हो सकता है।

अब भक्ति मार्ग में तो लोग घर-बार छोड़ कर चले जाते हैं परन्तु शिव बाबा घर-बार छोड़ने की बात नहीं कहते। उनके एक-एक महावाक्य में जीवन पलटाने की योजना और शक्ति है। अगर हम उन्हें इसी ध्यान से पढ़ें तो हम बहुत ही उन्नति कर सकते हैं।

खुशी के आंसू (पृष्ठ १९ का शेष)

"उस दिन के बाद आपके घर में मीट बना था क्या?"

"जी! उसी दिन रात्रि को बना था। उसके बाद कई बार बन चुका है।"

"तो फिर खा लेती थी न!"

"हाँ दीदी! सोचा था कि खाऊँ। पर……।"

"पर क्या?"

"पर चाह कर भी खा न सकी।"

"क्यों?"

"ज्यों ही गस्सा मुख में रखने को हुई, त्यों ही……।" कहते कहते वह चुप हो गई।

"त्यों ही? फिर……" मैंने पूरी बात जाननी चाही।

"फिर आपकी सारी बातें एक-एक करके कानों में गूंजने लगीं।……और फिर……" "और फिर क्या?…"

"फिर…आप मेरे सामने खड़ीं थीं। एकटक मेरी ओर मौनवत् देखती जा रही थीं और लगा कि जैसे तर्जनी से 'ना'…'ना' का इशारा कर रही हों।"

मैं तो शिव बाबा की याद में सुनती जा रही थी। बोलते-बोलते अचानक मेरा हाथ पकड़ कर अनुनय भरे लहजे में बोली—

"प्लीज़ दीदी! आप…बस! जिस दिन मीट नहीं खाया, उस दिन बहुत अच्छी नींद आई। ओफ़्फ़ोह! प्लीज़ दीदी! मेरी उस दिन की बात को भूल जाना। 'मीट' कभी नहीं खाऊंगी। कभी नहीं।"

मैंने मुस्कराते हुए आगे बढ़कर उसकी पीठ थपथपाई। बहुत स्नेह दिया, प्यार किया। उस दिन भी किया था। वही मीना थी। आज भी उसके बोल में दृढ़ता थी। उस दिन भी थी। पर……परन्तु आज चेहरे पर रुआंसापन न होकर मुस्कान थी। विजय की मुस्कान। आज आंखें झुकी हुई नहीं थीं। आज वह सीधा मेरी ओर देख रही थी।

तभी उन आंखों में आंसू छलछला आए। मैंने पूछा—"तो फिर यह आंसू क्यों?" "खुशी के भी तो आंसू होते हैं न दीदी।" कह कर तेज़ी से वह कमरे से बाहर चली गई।

(सत्य पर आधारित)

राष्ट्रीय योग संस्थान के सन्दर्भ में विचारणीय

योग का मानवतावादी और विश्व-कल्याणकारी स्वरूप

राम ऋषि शुक्ल, लखनऊ

भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय योग संस्थान की स्थापना के निर्णय से अब यह राष्ट्रीय प्रश्न बन गया है कि योग के वास्तविक तथा मूल स्वरूप पर खुल कर विचार किया जाय और सही निष्कर्षों पर पहुंचा जाय। यद्यपि योग का उद्गम-स्थल भारत रहा है और इसे मुख्यतः पूर्वीय तथा अध्यात्म की वस्तु माना जाता है, किन्तु वर्तमान विश्व की व्यापक अशान्ति तथा अव्यवस्था के कारण सम्पूर्ण जगत की मानवता हारकर अपनी समस्याओं के समाधान के लिए योग के अभिमुख हुई है।

क्या व्यक्ति और क्या राष्ट्र, क्या पूर्व और क्या पश्चिम, क्या आस्तिक और क्या नास्तिक, सभी अपनी-अपनी कार्य-शैली और अपनी-अपनी पद्धति की निष्फलता से निराश हो बैठे हैं, और जीवन तथा जगत के भविष्य पर एक गम्भीर प्रश्न चिह्न लग गया है। चूंकि विज्ञान और तकनालजी समाधान नहीं दे सके हैं चूंकि राजनीतिक दर्शन और सामाजिक प्रयोग समाधान नहीं दे सके हैं, चूंकि तंत्र-मंत्र और गुरु-ग्रंथ सभी सामूहिक हित की दृष्टि से अपनी -अपनी निरर्थकता सिद्ध कर चुके हैं, इसलिए लोगों में एक व्यापक और सामूहिक भावना जागृत हुई है कि योग को देखा-सुना जाय, समझा-परखा जाय और उससे विश्व-मानवता की समस्याओं के समाधान का एक प्रयास किया जाय।

हम सभी जानते हैं कि भगवद्गीता योगशास्त्र का अनुपम और श्रेष्ठतम ग्रन्थ है। ऐसा माना जाता है कि यह ग्रन्थ प्रमुखतः ईश्वरीय महावाक्यों का संकलन और समुच्चय है। इस ग्रन्थ में योग की नानविधि पद्धतियों का निरुपण-विवेचन प्रस्तुत करते हुए एक समन्वयमूलक राजयोग का निर्देश किया गया है। इस सन्दर्भ में गीता में वर्णित भगवान के इस प्रकार के महावाक्य विशेष रूप से ध्यान देने योग्य हैं: "हे अर्जुन ! जब यथार्थ योग और यथार्थ ज्ञान लुप्तप्रायः हो जाते हैं और इनके अर्थ का अनर्थ होने से संसार में भीषण धर्मग्लानि का समय उपस्थित हो जाता है तब मैं स्वयं प्रकट-अवतरित होकर धर्म की संस्थापना करता हूं और संसार का कल्याण या उद्धार करता हूं।"

वास्तव में देखा जाय तो संसार में आज पूरा-पूरा धर्मग्लानि का समय उपस्थित है। इस समय या काल की तुलना सहज ही महाभारत-काल से की जा सकती है, जब कि भगवान ने स्वयं पृथ्वी पर या भारत-भू पर उपस्थित होकर गीता-प्रणीत योग और ज्ञान का विश्व-मानवता को उपदेश किया था। जैसा कि आजकल हम देखते हैं, उस सयय भी बड़े-बड़े विद्वान और आचार्य मौजूद थे, नैतिकता और सदाचार की लम्बी-चौड़ी बातें थीं, ज्ञान-विज्ञान के चमत्कार थे और उपलब्धियाँ थीं, किन्तु सब कुछ जैसे निरथर्क हो गया था और समाज भीतर से एकदम खोखला हो गया था। अतः महाभारत का महाविनाशकारी संग्राम हुआ। कितना अद्भुत् तथा आश्चर्यजनक साम्य और सादृश्य है कि वैसी ही विषम परिस्थिति में वैसा ही विनाशकारी युद्ध या महायुद्ध आज पुनः आसन्न है। अस्तु।

चूंकि आज जैसी परिस्थिति में ही आज से लगभग ५००० वर्ष पूर्व गीता-प्रसिद्ध योग और उससे सम्बद्ध ईश्वरीय ज्ञान का उदय या उद्घाटन हुआ था इसलिए भारत सरकार के लिए यह आवश्यक है कि अपने योग संस्थान के कार्यक्रम में वह गीता में वर्णित राजयोग किंवा बुद्धियोग के सूत्रों तथा कार्य-पद्धति को सर्वप्रमुख स्थान प्रदान करे। इसके पहले कि शारीरिक व्यायामों को योग बताने वाले लोग, या श्वास-प्रश्वास की प्रक्रियाओं के नियमन द्वारा शारीरिक साधना करने वाले हठयोगी लोग, अथवा तंत्र-मंत्र या जादू-टोने जैसे चमत्कारों द्वारा ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त प्रभावी लोग उक्त संस्थान पर हावी हो जायें और अर्थ का अनर्थ करने लगें, भारत सरकार का यह परम पावन कर्त्तव्य है कि वह गीता-प्रसिद्ध योग के संबंध में जानकारी प्राप्त कराये और इसकी यथार्थ शिक्षा-दीक्षा देने वालों का वर्चस्व ही योग संस्थान मे प्रतिष्ठित करे।

गीता में ऐसा कहा गया है कि उचित आहार-विहार और मर्यादापूर्वक जीवन-यापन द्वारा इस राजयोग अथवा बुद्धियोग का आचरण करने पर मानव-जीवन में सभी दुःखों का नाश अर्थात् अन्त हो जाता है। गीता में प्रतिपादित यह राजयोग तीन सूत्रों किंवा अमृत वचनों में इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है:—(१) मामेकम् अर्थात् स्वयं को आत्मा निश्चय कर मुझ एक परमात्मा की शरण हो जाओ —अर्थात् सच्चे स्वधर्म में टिक जाओ। (२) मन्मना भव अर्थात् आत्म-अभिमानी बनकर अपने मनको मुझ परमात्मा में नियोजित करो अर्थात् चलते-फिरते-उठते-बैठते सतत सहज योग के अभ्यासी बनो। (३) मद्याजी भव अर्थात् बुद्धि को स्थिर कर तथा कृत-संकल्प होकर मन-वचन-कर्म द्वारा जो कुछ भी करो मेरे प्रति यज्ञ की भावना से करो—अर्थात् स्वकल्याण करते हुए विश्व-कल्याण के प्रति समर्पित भावना से कार्य करो।

उपर्युक्त सन्दर्भ में ही गीता में इस प्रकार के भागवत महावाक्य उच्चारित हैं—'स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावह।' स्वधर्म का सीधा-सादा और स्पष्ट अर्थ यह होता है कि हम स्वयं को आत्मा निश्चय कर शांति में टिकें और शांति-स्वरूप बनें, क्योंकि शांति ही आत्मा का सहज धर्म या स्वधर्म है, और शांति के सागर परमात्मा से ही नैसर्गिक दाय (Natural Inheritance) के रूप में यह हमें सहज प्राप्य है। मनुष्यों द्वारा चलाये गये जितने भी धर्म या सम्प्रदाय संसार में प्रचलित हैं वे सर्वमान्य तथा सर्व स्वीकृत नहीं हैं, जबकि गीता में स्वयं परमात्मा द्वारा प्रतिपादित और उद्घाटित स्वधर्म वस्तुतः अध्यात्म-मूलक धर्म (Spiritual Religion) है जो जाति-क्षेत्र-रंग भेद की कोई सीमाएं नहीं मानता, और इसलिए जो सम्पूर्ण मानवता के लिए सर्वमान्य तथा सर्वस्वीकृत धर्म हो सकता है।

सारांशतः, स्वधर्म का अर्थ होता है आत्मा का धर्म। आत्मा का धर्म अर्थात् न मात्र हिन्दू का, न मात्र मुसलमान का, न मात्र सिख-जैन का, न मात्र ईसाई-यहूदी का, वरन् प्रत्येक मानवात्मा का अर्थात् मानवमात्र का धर्म। ऐसे मानव-धर्म का अथवा दैवी धर्म का उपदेश तो केवल परमात्मा ही कर सकता है, और गीता के भागवत महावाक्यों द्वारा इसी विश्व-धर्म का उपदेश किया गया है तथा गीता-ज्ञान और गीता-प्रणीत राजयोग द्वारा उस उदात्त विश्व-धर्म की स्थापना का ही विधान किया गया है। गांधी जी के अनन्यतम शिष्य एवं अनुयायी आचार्य विनोबा भावे ने कहा था कि वह समय आ रहा है, जब कि सभी धर्म एक व्यापक अध्यात्म-धर्म में विलीन हो जायेंगे और सभी राजनीतिक वादों का विलय एक मानवीय आर्थिक कार्यक्रम में हो जायेगा। गीता में जिस स्वधर्म का प्रतिपादन किया गया है वही भविष्य का वह मानव धर्म किंवा दैवी धर्म बनेगा जिसका उल्लेख आचार्य विनोबा भावे ने उपर्युक्त प्रकार के विचारों में किया है।

वास्तव में गीता में प्रतिपादित राजयोग का और गीता-ज्ञान का चरम लक्ष्य ही संसार में मानवता-मूलक दैवी धर्म की स्थापना रहा है। गीता में जब भगवान कहते हैं कि धर्मग्लानि के अंत और धर्म की संस्थापना के लिए मैं अवतरित होता हूं तो उसका अर्थ ही यह होता है कि वह यथा समय संसार के रंगमंच पर उपस्थित होकर नाना प्रकार के संकीर्ण

दायरों में बंटी निम्न कोटि की मानवता को उच्च और उदात्त कोटि की दैवी मानवता में रुपान्तरित कर दिया करते हैं और सम्पूर्ण विश्व में उसी दैवी धर्म की जयजयकार हो जाया करती है। न केवल अर्वाचीन युगद्रष्टाओं और चिन्तकों का, वरन् समस्त प्राचीन घोषणाओं और भविष्यवाणियों का भी एक वाक्य में सार-तत्व यही है कि नयी सहस्त्राब्दि के आगमन के साथ आज की सम्पूर्ण बहुविधि मानव-जाति एक सर्वथा एकात्मक मानवजाति में रुपान्तरित हो जायेगी तथा संसार में एक बार फिर दैवी धर्म की जयजयकार हो जायगी। इन घोषणाओं और भविष्य कथनों का सर्वसामान्य निष्कर्ष यह भी है कि संसार में यह परमश्रेष्ठ कार्य नवजाग्रत और नवोदित भारत के माध्यम से सम्पन्न होगा।

उपर्युक्त सन्दर्भों और विश्व में भारत की भावी भूमिका की व्यापक पृष्ठभूमि को देखते हुए वर्तमान भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय योग संस्थान की स्थापना का असाधारण और अनुपम महत्त्व हो जाता है। चूंकि आगामी दो दशकों के भीतर ही भारत के माध्यम से संसार में विश्व-मानवता के परम श्रेष्ठ कल्याण और नवोदय का कार्य सम्पन्न होना है इसलिए भारत सरकार का यह विशेष दायित्व हो जाता है कि अपने राष्ट्रीय योग संस्थान को वह परम्परागत एकदेशीय पद्धतियों के ज्ञाताओं के हाथों में न जाने दें, वरन् ऐसे उदारतावादी लोगों को वह इसमें प्रमुख स्थान दें, जो स्वरूपत: विश्वमानवता-वादी हों, जो गीता के स्वधर्म के आदर्श और राजयोग तथा गीता-ज्ञान के मर्मों को ठीक-ठीक समझते हों, जो रंग-जाति-नस्ल के भेदों से ऊपर उठे हुए हों और जिनका योग तथा ज्ञान का कार्यक्रम व्यापक मानवीय तथा विश्वकल्याण मूलक पृष्ठभूमि में सम्पादित तथा सम्पन्न किया जा रहा हो। इस सन्दर्भ में उचित तो यह होगा कि योग और ज्ञान में रुचि रखने वाले तथा राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय स्तरों पर कार्यरत व्यक्तियों और संगठनों का एक प्रति-निधिपूर्ण सम्मेलन या गोष्ठी भारत सरकार आयोजित करे, और गीता के राजयोग तथा गीता-ज्ञान की कसौटी पर जो लोग खरे उतरें उनके माध्यम से अथवा परामर्श से ही संस्थान का कार्य-संचालन प्रारम्भ किया जाय। योग भारत की अनुपम निधि है, योग से संसार में भारत का मस्तक ऊँचा उठ सकता है, योग-बल से भारत संसार में उस एकात्मक विश्व राज्य की स्थापना का निमित्त बन सकता है जिसको सम्पन्न करने में अपनी विफलता रूस और अमरीका दोनों ही सिद्ध कर चुके हैं। अतएव, योग की दिशा में भारत सरकार यदि पग बढ़ाती है तो उसे योग के वास्तविक एवं मूल स्वरूप का पता लगाना और विश्व-कल्याणकारी योग या राजयोग को प्रश्रय देना ही समीचीन होगा—उचित, वांछनीय एवं सामयिक होगा। ❀❀

गीत

ब्र०कु० रामकुंवर सिंह, प्रशासन अधिकारी

छोड़ो अब पुरानी दुनियां को,
विष है अमृत पान नहीं।
माया ने जो छोड़ा है हमकों,
शिव बाबा का वरदान है यह॥

कलियुग को सतयुग में करना,
शिब बाबा की करामात है यह।
बाबा ने जो दी पहचान हमको,
ज्योति बिन्दू निराकर है वो॥

श्रीमत के कदमों पर चलना,
योग ज्ञान का आधार है ये।
जोड़ो पदमों की कमाई को,
प्रेम सुख ज्ञान का भण्डार है वो॥

माया जीत है बनना हमको'
उस परमशक्ति का फरमान है ये।
पवित्र बनना, योगी बनना,
बाबा की मुरली का कमाल है ये॥

"खुशी के आंसू"

(ब्र०कु० राजकुमारी, मजलिस पार्क, देहली)

"पर दीदी ! हमारे पापा तो कहते हैं कि माँस में प्रोटीन बहुत होता है और ताकत के लिए ऐसी वस्तुएं खाना बहुत ज़रूरी है·····।"

"नहीं बच्चे, ऐसी बात नहीं। प्रोटीन तो सोयाबीन, पनीर दालों आदि में भी बहुत होता है। जब अन्य कई शक्ति-वर्धक पदार्थ हैं तो फिर अपने स्वास्थ्य के लिए दूसरे की जान ही क्यों ली जाए? और फिर वास्तविकता तो यह है कि माँस स्वास्थ्य को बिगाड़ता है।"

"सो कैसे दीदी ! यह तो नई बात सुनी·····।"

"बच्चे ! यह तो एकदम स्पष्ट है। जब किसी भी प्राणी को मारा जाता है तो मौत सामने देख कर उसे बहुत भय, क्रोध, उत्तेजना व घबराहट होती है। जिसके फलस्वरूप उसके शरीर में विषैले तत्व मिल जाते हैं, और उसी शरीर का माँस खाने वाले के भी स्वास्थ्य पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। पशुओं के माँस में यूरिक एसिड बहुत मात्रा में होता है, जो मनुष्य के लिए घातक है। इसके अतिरिक्त ऐसा भोजन बुद्धि को तमोप्रधान भी बनाता है।"

"वह कैसे ?"

"देखिए ! किसी के प्राण लेना हिंसा है और हिंसा एक तमोप्रधान कार्य है। जब प्राप्ति का साधन ही ऐसा है तो परिणाम कैसा होगा ? ऐसे कार्य के फलस्वरूप जो भोजन मिला तो अवश्य ही बुद्धि भी तमोप्रधान हो जाएगी। तमोप्रधानता निशुल्क भी मिले, तो भी त्याज्य है। परमपिता कहते बच्चे, अहिंसा परमो धर्म :।"

यह थी हमारे विद्यालय की नवम् कक्षा की छात्राओं से मेरी बातचीत। वास्तव में मैं उन्हें सात्विक आहार के लिए प्रेरित कर रही थी। काफी दिलचस्प बातचीत के बाद सभी छात्राएँ मान गईं कि माँस और अण्डा तामसिक भोजन है। अतः इसे त्याग देना चाहिए। इसके पश्चात् मैंने पूछा—

"अच्छा, अब बताइए ऐसा तामसिक भोजन आप पसन्द करेंगी ?"

"एकदम नहीं।" कक्षा में सबके स्वर एक साथ उठे।

"अगर आपके घर ऐसा भोजन बने तो·····?"

"हम अपना भोजन अलग बना लेंगी·····" एक छात्रा का स्वर।

"मैं अपने घर में ही अन्य सबका भी मीट अण्डा बन्द कर दूंगी।" दूसरी छात्रा का दृढ़ संकल्प भरा स्वर।

"मैं ऐसी छी: छी: वस्तु को खाना तो दूर, हाथ भी नहीं लगाऊँगी।"

"देख लीजिए ! पूरा जीवन पड़ा है। सदा के लिए इस तामसिक भोजन का त्याग कर सकती हो न।"

"जी दीदी ! हम प्रतिज्ञा करती हैं कि आज से लेकर कभी भी ऐसी मलेच्छ वस्तुएँ नहीं खाऐंगी।"

"आप सभी यह प्रतिज्ञा अपने मन से कर रही हो न, मजबूरी में तो नहीं ?"

"नहीं जी ! मजबूरी से नहीं। हम अपनी इच्छा से और खुशी से यह प्रतिज्ञा करती हैं।"

"तो फिर, प्रतिज्ञा अविनाशी रहेगी न।"

"बिल्कुल जी ! हम लिख कर देती हैं।"

"ठीक है। सभी लड़कियाँ साफ-साफ शब्दों में अपनी-अपनी प्रतिज्ञा लिखें और कक्षा की मानीटर को दे दें।"

यह कह कर मैं अपने कार्य में व्यस्त हो गई। कुछ मिनटों पश्चात् जब मानीटर सब के प्रतिज्ञा-पत्र इकट्ठे कर रही थी तो अचानक शोर सुनाई दिया। मैंने पूछा—"क्या हुआ ? यह शोर कैसा ?"

"मीना ने प्रतिज्ञा नहीं लिखी।"—एक रोष

भरा स्वर।

"दीदी ! मीना ने प्रतिज्ञा नहीं की।" दूसरा स्वर।

"मीना ने प्रतिज्ञा नहीं की……।"

"छी: छी: मीना माँस खाएगी……" इसी प्रकार के अनेक सम्मलित स्वर कक्षा में उठने लगे।

"कृपया शान्त हो जाइए !" मैंने उच्च स्वर में कहा। सभी छात्राएँ एकदम शान्त हो कर बैठ गईं। केवल एक लड़की खड़ी रही। मैंने गौर से देखा। दुबली, पतली, गोरी। कोमल व सौम्य सी दीखने वाली एक अति मोहक सी छात्रा।

"आप ही का नाम मीना है?" मैंने उत्सुकता से पूछा।

"हाँ जी ! मैं ही मीना हूँ।" उसके स्वर में गम्भीरता थी।

"क्या आपने प्रतिज्ञा नहीं की?" मैंने फिर पूछा।

"जी नहीं।"

"करोगी भी नहीं?"

"एकदम नहीं।"

"क्यों?"

"मैं मीट और अण्डा खाऊँगी। यह त्याग नहीं करना।" उसके स्वर में सच्चाई और दृढ़ता थी। चेहरे पर रुआँसापन था और आँखें झुकी हुई थीं।

अन्य सभी छात्राओं के नयन उत्सुकता, डाँट की आशंका व मज़ाक से भरे थे।

मीना के चेहरे पर भी अपमानित होने के पूर्व की स्थिति में आशंका की लहरें आ जा रही थीं।

अब कई जोड़े नेत्र मेरा मुंह जोह रहे थे, मेरी प्रतिक्रिया जानने को उत्सुक थे।

मैंने अति सहज व शीतल भाव से मुस्कराते हुए कहा—"कोई बात नहीं। अगर आपको यह भोजन पसन्द है। तो अवश्य खाना। कोई ज़बरदस्ती नहीं है।" साथ ही उसे अपने निकट बुलाया।

मीना को जैसे विश्वास नहीं हो पा रहा था वह डरती हुई धीरे-धीरे मेरे पास आई।

मैंने प्रथम तो उसे बहुत प्यार किया, फिर आश्वासन दिया कि उसे कोई भी लड़की कुछ नहीं कहेगी।

मैंने सभी लड़कियों को सख्ती से मना कर दिया कि कैसी भी स्थिति आ जाए, पर कोई भी लड़की मीना को कुछ न कहे।

प्रत्येक व्यक्ति अपनी मर्जी का मालिक है। कोई ज़बरदस्ती का सौदा थोड़े ही है। इस प्रकार कह कर मैंने मीना को स्नेह से बिठा दिया। उस समय उसकी नज़रें नीची थीं।

इस घटना को एक मास बीत गया। बीच में यदा-कदा लड़कियों से प्रतिज्ञा बद्धता के विषय में पूछ लिया करती।

किसी की भी प्रतिज्ञा भंग नहीं हुई थी। हाँ, कभी-कभी कोई छात्रा मीना के विषय में कहना चाहती तो मैं उसे फौरन चुप करा देती। लगभग डेढ़ मास पश्चात्—

विद्यालय में वार्षिक परीक्षा चल रही थी। मैं एक कमरे में निरीक्षिका थी। सभी छात्राएँ खामोशी से पर्चे कर रही थीं और मैं लौकिक के साथ-साथ अलौकिक कर्त्तव्य भी कर रही थी। परमात्मा की याद की मौज मस्ती में थी।

पेपर समाप्त हुआ। सब छात्राएँ चलीं गई, परन्तु एक छात्रा बैठी ही रही। वह सिर झुकाए बैठी थी, व्यस्ततावश मैंने भी उसका चेहरा न देखा था।

उसे बैठे देख मैंने कहा—"बच्चे ! आप भी जाइए, समय पूरा हो चुका।"

"जी :…अ…च…छा…!…जी !"

उसने धीरे से सिर उठाया। मैंने ध्यान से देखा। अरे ! यह तो वही लड़की मीना थी। गत माह की सारी घटना चलचित्र की तरह बुद्धि में घूम गई।

वह एकटक मेरी ओर देखती जा रही थी।

"क्या बात है मीना?" मैंने स्नेह से पूछा। वह कुछ कहना चाह रही थी, पर कह न पा रही थी।

"बोलो, क्या बात है?"

"दीदी……मैंने उस दिन से आज तक मीट नहीं खाया। नहीं खाया ! नहीं खाऊँगी ! कभी नहीं खाऊँगी।"

(शेष पृष्ठ १४ पर)

एक दिन जाना है

ब्र० कु० व्ही० जे० वराडपांडे, न्यायाधीश, बिसालपुर (म० प्र०)

वह कौन सा दिन है? जाना कहां है? कहते हैं दुनिया मुसाफिरखाना है आखिर यहां से है जाना। दुनिया मुसाफिरखाना है तो घर कहाँ? घर तो होता है। इस मुसाफिरखाने में हम कहां से आ टपके? कब तक रहेंगे? घर कब जाऐंगे? ये सब आज तक प्रश्न ही बने रहे। प्रश्न तो हैं बड़े सरल किन्तु उसके उत्तर उतने ही कठिन हैं। क्योंकि आज तक इन प्रश्नों का सरल, स्पष्ट और अकाट्य उत्तर कोई नहीं दे सका। एक तो मानव अपने को और अपने घर को भूला हुआ है, पता पूछ-पूछ कर और भी भूलभूलैया में फँस गया है। प्रश्न सरल है किन्तु उत्तर इतना जटिल दिया जाता रहा है कि प्रश्न भी जटिल बन गया है और मनुष्य भ्रमित हो गया है। "दुनिया मुसाफिरखाना" सुन-सुनकर उमर बीत गई किन्तु साधु, सन्त, महन्त, पण्डित, शास्त्री कोई यह नहीं बता पाये कि वास्तव में घर है कहां? जहां से हम इस मुसाफिरखाने में आ गये। मुख्य बात किसी ने स्पष्ट रूप से बताई नहीं। मनुष्य मुसाफिरखाने में तो आ गया है किन्तु घर का ठीक पता न होने से मुसाफिरखाने को ही अपना घर समझकर संतोष कर रहा है। जबकि इस मुसाफिरखाने में कितना दुख और अशांति समाई है। सोए ऐसे बेखबर हैं मानो ये ही उनका प्यारा घर है और कहते हैं "घर छोड़कर कहां दर दर भटकते हो।" तो अब चिन्ता करने की जरूरत नहीं। पता देने वाला परम प्रिय परमपिता परमात्मा आ चुका है और पता इस तरह दे रहा है जैसे कोई अपने घर का पता बताता है। वास्तव में जो जहां रहता है वही ठिकाने का पता ठीक से दे सकता है। बाकी लोग तो केवल अटकलें लगाते रहते हैं। आपको जानकर खुशी होगी कि अटकलबाज़ी का ज़माना बीत चुका और सच्चाई, सत्य शिव परमात्मा ने प्रकट कर दी है जिसे जानने के लिये मानव को उत्सुक होना चाहिऐ। तो आइए पता सुनिये, कितना सरल है, शायद बम्बई में रहने वाले का भी इतना सरल न होगा—पता है—**आकाश से परे, सूर्य चाँद के परे, तीसरी मंजिल याने ब्रह्मलोक—यही उसका और हमारा घर है।** ब्रह्मलोक को परमधाम, शांतिधाम, मुक्तिधाम, निर्वाणधाम, अथवा निरकारी दुनिया भी कहा जाता है जो सब आत्माओं का मूल-वतन है। परमात्मा आत्माओं का बाप और आत्माऐं उसके बच्चे। तो बच्चे बाप के साथ ही रहेंगे ना। गीता में भगवान के महावाक्य हैं कि मैं परमधाम से धर्म स्थापना के लिये पृथ्वी पर आता हूं। इससे पता चलता है कि परमात्मा का घर परमधाम है। इसी महावाक्य की पुनरावृत्ति परमात्मा अभी कर रहे हैं।

सवाल यह कि उस घर में हम कब जायेगें? परमात्मा शिव बताते हैं कि बच्चों जब जाने का वक्त आता है तो मैं कालों काल, महाकाल, तुम्हें घर ले जाने के लिये आता हूं, घर का पता बताता हूं, और वहां जाने की विधि भी बताता हूं। पता और विधि अवश्य गौर करियेगा तब ही घर जा पायेंगे। वह दिन महाविनाश का समय है जो कलियुग के अन्त में आता है जब सब आत्माऐं अपने घर जाती हैं। महाविनाश अर्थात् कयामत होने तक कोई आत्मा अपने घर नहीं जा सकती। बल्कि ८४ जन्मों का चक्कर इसी दुनिया में काटती रहती है।

लोक मान्यताऐं अनेक हैं। किन्तु विवेक नहीं मानता। किसी के मरने पर लोग कहते हैं वह इस दुनिया से चल बसा। कोई कहते हैं वह स्वर्ग सिधार गया। कोई कहते हैं परलोक सिधार गया। और कोई कहते हैं भगवान को प्यारा हो गया। यह मान्यता भी है कि मनुष्य ८४ लाख योनियों में जन्म लेकर फिर नर तन पाता है। कबीर ने कहा है लख

८४ फेरे फिरकर सुन्दर नर तन पाया।" क्या ये सब बातें सत्य हैं ? नहीं। मनुष्य मरकर इस दुनिया से कहां जाता है, किसी को नहीं मालूम। किन्तु अब मालुम होना चाहिऐ कि आत्मा शरीर से अलग है। आत्मा मरती नहीं है बल्कि शरीर का नाश होता है। ५ तत्वों का देह, ५ तत्वों में मिल जाता है जिसे कहते हैं मिट्टी में मिल जाना। आत्मा जड़ शरीर छोड़कर दूसरा शरीर धारण कर लेती है और उसका नाम रूप बदल जाता है। तो इस प्रकार सत्य यही है कि आत्मा इसी दुनिया में रहती है। दुनिया छोड़कर नहीं जाती। केवल उसका शरीर रूपी चोला अर्थात् आत्मा का साकारी रूप परिवर्तन हो जाता है।

कुछ ऐसे समाचार आपने पढ़े होंगे कि मरने के बाद आत्मा दूसरे घर में जन्म लेती है और पूर्व जन्म की स्मृति होने से वही आत्मा दूसरा शरीर धारण करके बताती है कि मैं पिछले जन्म में अमुक घर में रहता था, अमुक मेरे माता-पिता अथवा पत्नि बच्चे हैं, मेरी मृत्यु अमुक-अमुक प्रकार से हुई थी आदि। इन बातों की जांच करने पर वे शत प्रतिशत सत्य पाई गईं। इन हकीकतों से न केवल पुर्नजन्म का सिद्धांत पुष्ट होता है किन्तु यह भी सिद्ध होता है कि मरने के बाद मनुष्य भिन्न नाम रूप वाला मनुष्य शरीर लेकर इसी दुनिया में रहता है और वह पशु पक्षियों की योनियों में नहीं जाता। स्वर्ग भी नहीं जाता और न जा सकता है। क्योंकि स्वर्ग की अभी तो रचना ही नहीं हुई। स्वर्ग ढाई हजार वर्ष पहले इसी पृथ्वी पर था और ढाई हजार साल से दुनिया नर्क बन गई है। इसके बाद पुनः स्वर्ग की रचना करने लिये परमात्मा स्वयं अवतरित हुए हैं। स्वर्ग के बाद नर्क और नर्क के बाद स्वर्ग—ऐसा अविनाशी चक्कर चलता है। सतयुग, त्रेता स्वर्ग की दुनिया तथा द्वापर, कलियुग नर्क की दुनिया कही जाती है। धनी लोग कहते हैं हमारे लिए यही स्वर्ग है क्योंकि उनके पास सुख के सभी साधन होते हैं (भले ही शांति न हो), फिर भी किसी के मरने पर कहते हैं वह स्वर्गवासी हो गया। जिसका मतलब यह होता है कि जब वह जिन्दा था तो नर्क में था और कहने वाला भी नर्क में है तो तुक नहीं जमता। वास्तव में ढाई हजार साल से मनुष्य इसी नर्क में ही जन्म लेता रहा है। यह मान्यता भी विज्ञान द्वारा गलत साबित हो चुकीहै कि स्वर्ग चन्द्र लोक में है। क्योंकि वहां वैज्ञानिक पहुंच चुके हैं और वास्तविकता जान चुके हैं। वहां तो जीने के लिये हवा और पीने के लिये पानी तक नहीं है। और न जीवन है। ५ तत्वों की दुनिया तो यही है जहां हम मुसाफिर होकर रहते हैं और जब इस मनुष्य सृष्टि का (प्रकृति का नहीं) विनाश हो जाता है तब सभी आत्माऐं ५ तत्वों का शरीर इस ५ तत्वों वाले मुसाफिरखाने में छोड़कर आकाश तत्व से परे, सूर्य से परे जहां छटा तत्व अर्थात 'ब्रह्म महा तत्व' नाम का लाल प्रकाश वाला है वहां ज्योति बिन्दु रूप में अर्थात् अपने वास्तविक रूप में चली जाती हैं। और नवीन सृष्टि की रचना होने पर नम्बरवार पुनः खेल खेलने के लिए इस मुसाफिरखाने में अर्थात् इस परदेश में आती हैं। तो हमारा देश, हमारा घर, हमारा मूल वतन ब्रह्मलोक है जहां हम महाविनाश होने के बाद ही जाते हैं और मुक्त अवस्था में कुछ काल रहते हैं। इसे ही कहते हैं मुक्ति अर्थात् कुछ काल के लिये जन्ममरण के चक्कर से मुक्ति।

वह दिन अब आ गया है जब हमें अपने घर जाना है। इस वाणी से परे की दुनिया अर्थात् निर्वाण धाम जाना है। इसलिए हम सब को चाहे बूढ़ा हो, जवान हो, बच्चा हो, सब की अभी वाणप्रस्थ वाणी से परे जाने की अवस्था चल रही है। तो बन्धुओ, सबको तैयार रहना है, सावधान रहना है। कौन-कौन सी सावधानियां बरतनी हैं, किस प्रकार तैयार रहना है यह रहस्य परमपिता परमात्मा ने बताया है वह ज्ञान प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के किसी भी केन्द्र से सहर्ष लिया जा सकता है।

□□

फ़रीदाबाद सेवाकेन्द्र की ओर से दीदी मनमोहिनी जी को कार्यक्रम में श्रद्धान्जली अर्पित की गई। मंच पर (दाएं से) भ्राता के० एन० गुलाटी, भ्राता अमीरचन्द कथूरिया, भ्राता विश्वबन्धु जी, भ्राता कन्हैया लाल खटक, ब्र० कु० रुकमणी जी, ब्र० कु० शुक्ला जी, ऊषा जी तथा भ्राता विश्वनाथ जी विराजमान हैं।

अंजार सेवाकेन्द्र पर आयोजित राजयोग भट्ठी की समाप्ति के अवसर पर उपस्थित वहां के मामलतदार भ्राता जयसुख भाई हिंगलानिया जी अपने विचार प्रस्तुत करते हुए, साथ में पी० एस० आई० जी०, ब्र० कु० उर्मिला जी व ब्र० कु० उमा जी बैठे हैं।

मुलंद—बम्बई रोटरी क्लब द्वारा आयोजित "मेडिटेशन एज मैडिशियन" विषय पर अपने विचार प्रकट करते हुए डा० गिरिश पटेल। उनके साथ रोटरी क्लब के प्रेजिडेंट और सेक्रेटरी बैठे हैं।

भैरहवा सेवा केन्द्र की ओर से रुपन्देही, जिला भैरहवा (नेपाल) स्थित जेल में लगभग 200 कैदियों के समक्ष चरित्र निर्माण के बारे में प्रवचन करती हुई ब्र० कु० प्रनीता जी। साथ में ब्र० कु० सुरेन्द्र तथा अन्य।

पालम (दिल्ली) सेवाकेन्द्र पर ले० जन० भ्राता वी० वी० प्रताप राव के सेवा निवृति के पश्चात् आयोजित कार्यक्रम के अवसर पर भाषण करते हुए भ्राता प्रताप जी।

गोहाटी में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन समाजसेवी भ्राता वासुदेव शर्मा करते हुए। ब्र० कु० शीला, नीलम, ब्र० कु० धीरेन्द्र, सुशील भ्राता मूलचन्द जैन तथा अन्य चित्र में है।

नारायणपुरा (अहमदाबाद) सेवाकेन्द्र द्वारा नवजीवन सोसायटी गीतापाठशाला के उद्घाटन का दृश्य।

अहमदाबाद में एल० जी० हास्पीटल में डाक्टरों के कार्यक्रम में (बाएं से) डा० किरन पटेल (सम्बोधन करते हुए) ब्र० कु० मंजू, शारदा, डा० गिरीश पटेल, डा० एच० एस० शाह तथा डा० राजेश उपस्थित हैं।

नीलगिरी में आध्यात्मिक प्रदर्शनी के उद्घाटन अवसर पर ब्र० कु० बीना, भ्राता एम० आर० सरन (O.A.S., SDO) को चित्रों की व्याख्या करते हुए।

उत्तम नगर—दिल्ली में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक संग्रहालय के उद्घाटन अवसर पर ब्र० कु० हृदय मोहिनी जी शिव ध्वजारोहण करते हुए। साथ में अन्य भाई बहिन खड़े हैं।

अहमदाबाद में गुजरात राज्य के राज्यपाल भ्राता चान्डी जी को ईश्वरी सन्देश देते हुए ब्र० कु० शारदा जी, ब्र० कु० सरला जी तथा ब्र० कु० नर सिंगाणी जी।

माउंट आबू में योगशिविर करके आए हुए जीन्द के भाइयों का स्नेह मिलन रखा गया। ब्र० कु० नरपत जी आए हुए श्रोताओं का धन्यवाद कर रहे हैं। मंच पर बाएं से दाएं बैठे हैं—भ्राता मांगे राम गुप्ता भूतपूर्व मंत्री, भ्राता जयप्रकाश कौशिक, प्रशासक नगरपालिका, ब्र० कु० विजय बहिन एवं ब्र० कु० कृष्णा जी।

भुवनेश्वर सेवाकेन्द्र की ओर से ओ० यू० ए० टी० कान्फ्रैंस हाल में "यूथ कान्फ्रैंस" का आयोजन किया गया, जिसमें उड़ीसा के ब्र० कु० भाई-बहिन उपस्थित हुए।

(पृष्ठ ८ का शेष)

तन्त्रज्ञान एवं कुन्डलिनी योग क्या है ?

दूसरा चक्र या कमल **स्वाधिष्ठान** कहलाता है। चित्रों में इसे 'शुक्रकोष' या वीर्य के स्थान का जनेन्द्रिय के समीप दिखाया जाता है। अतः यह ब्रह्मचर्य का सूचक है। यह इस बात का प्रतीक है कि व्यक्ति के अन्दर अब जागृति आ गई है और अब उसने अपनी काम इच्छा पर नियंत्रण रखा हुआ है और ब्रह्मचर्य का जीवन व्यतीत करता है। स्वाधिष्ठान का अर्थ है गिरी हुई स्वस्थिति (आत्मा) का स्थान। इससे पूर्व आत्मा में पशु तुल्य इच्छाओं या मलिन व गन्दी आदतों को आधार बनाया हुआ था परन्तु जब वह इस स्थिति से ऊपर उठती है और इसकी निर्णय शक्ति बढ़ती है तो वह जागृति की दूसरी अवस्था में आ जाती है। अब उसने आत्मस्थिति का अभ्यास अधिक तीव्रता से आरम्भ कर दिया है।

तीसरा चक्र **मणिपुरा चक्र** कहलाता है। इसका शाब्दिक अर्थ है "हीरों का नगर"। साधारणतया मनुष्य समझता है कि भौतिक सुखों का आनन्द राजनैतिक शक्ति, नाम व ज्ञान, यही हीरे मोती हैं। लेकिन अब उसमें यह चेतना आ गई है कि ईश्वरीय ज्ञान के विभिन्न बिन्दु ही हीरे हैं और दिव्य गुण जवाहरात हैं। चित्रों में इसे नाभि के समीप दर्शाया गया है इसे चढ़ता सूरज बताया गया है। तान्त्रिक विद्या की पुस्तकों में यह बताया गया है कि जब व्यक्ति इस अवस्था को प्राप्त कर लेता है तो उसमें वास्तविक रूप में संसार के प्रति वैराग्य उत्पन्न हो जाता है। वह उन्हें 'मिट्टी के पिन्ड' समझता है। यह कहा जाता है कि जिसने वह स्थिति प्राप्त कर ली हो उसे गिरने का अब कोई भय नहीं रहता। उसकी आध्यात्मिक उन्नति अब सुरक्षित है। स्पष्टतः यह उस अवस्था का प्रतीक है जब व्यक्ति के अन्दर आध्यात्मिक ज्ञान के हीरों व मोतियों के प्रति अथाह प्रेम पैदा हो गया है और उसका आकर्षणों व प्रलोभनों की ओर झुकाव नहीं होता।

चौथा चक्र या कमल **अनाहाता** कहलाता है। यह आध्यात्मिकता की उच्चतम अवस्था मानी जाती है। माया या अज्ञानता और बुरे विचारों की शक्तियां योगी को अब हरा या मार नहीं सकती। उसे अब 'महावीर', 'महारथी', या 'अंगद' समान दृढ़ कहा जा सकता है। 'अनाहाता' का अर्थ है 'जिसे उत्तेजित न किया जा सके', या 'जिसे हराया न जा सके'। जिसने आध्यात्मिक उन्नति की इस अवस्था को प्राप्त कर लिया है, अब वह उत्तेजना या उत्साहट में नहीं आता बल्कि अचल और आनन्दमय अवस्था में रहता है। अब वह प्रेम, करुणा, मित्रता, शान्ति तथा सहयोग का सन्देश वाहक बन जाता है। उसका प्रेम बनावटी या किसी अनुकूल परिस्थिति के कारण नहीं उत्पन्न होता बल्कि उसका प्रेम स्वाभाविक व निरन्तर बना रहता है। उसकी परोपकारिता तथा श्रेष्ठता नदी के समान निरन्तर बहती रहती है। उसके ये दिव्य गुण किसी परिस्थिति के कारण नहीं बनते बल्कि स्वाभाविक रूप से कायम रहते हैं। वह ईश्वर का प्रेम, शान्ति तथा सन्तोष की किरणें फैलाता है। चित्र में इसका स्थान दिल में दर्शाया है जो भावनाओं का सूचक है। यह अवस्था भावनाओं के शुद्धिकरण की सूचक है।

पाँचवां चक्र **विशुद्ध** कहलाता है। इसका अर्थ है 'पूर्णरूप से पवित्र'। अब कोई भी विकारी संस्कार या विचार आत्मा को नहीं स्पर्श करता उसकी पवित्रता का गुण प्रभावशाली होता है। उसके श्रेष्ठ गुण ऊंचे शिखर पर पहुंच जाते हैं। यह चक्र गले के क्षेत्र में, थाईराइड ग्रंन्थि और ध्वनि बक्स में स्थित होता है। जब व्यक्ति इस अवस्था को प्राप्त कर लेता है तो उसकी वाचा मधुर, प्रभावशाली तथा मंगलकारी हो जाती है।

छटा चक्र **अजना** चक्र कहलाता है। इसका चित्र में स्थान दोनों भौंहों के मध्य दर्शाया गया है। इस अवस्था को प्राप्त करने से मनुष्य की विचार शक्ति अत्यंत महान बन जाती है। इस स्थान को त्रिवेणी, मुक्त त्रिवेणी, 'शिव नेत्र' या 'तीसरा नेत्र' भी कहा जाता है। यह उस अवस्था का सूचक है जब मनुष्य संसार के आदि, मध्य, अन्त को भलीभांति समझ लेता है और उसने कामेच्छा को पूर्णरूप से भस्म कर दिया है और उसके मन की आंख सदा शिव और उसके अनन्त ज्ञान पर स्थित होती है। आत्म-स्वरूप में अब वह पूर्ण स्वतन्त्र है।

सातवां चक्र **साहसरा** कहलाता है। चित्र में इसे

बहुधा मस्तिष्क के प्रधान भाग में दर्शाया गया है। इसे सहस्त्रों पंखुड़ियों वाले कमल के रूप में दर्शाया जाता है जोकि पूर्ण आध्यात्मिक विकास का सूचक है। इसका अर्थ है कि व्यक्ति की आध्यात्मिक जागृति हजार गुणा हो गई है। जब व्यक्ति इस अवस्था को प्राप्त कर लेता है तो उसका मन निरन्तर शान्ति, पवित्रता तथा आनन्द से भरपूर रहता है।

हमने यहां पर विषय को संक्षिप्त करने के विचार से अन्य चक्रों की चर्चा नहीं की है, जैसे कि सूर्य चक्र, चन्द्र चक्र, मानुष चक्र अथवा सोम चक्र, क्योंकि हमारा मुख्य लक्ष्य यही बताना था कि ये कोई व्यक्त या स्थूल चक्र नहीं हैं बल्कि ये आध्यात्मिक अवस्थाओं के प्रतीक हैं जिनमें हरेक अवस्था काल (पंखुड़ियों की निश्चित संख्या सहित) की सूचक है। हम यह भी बताना चाहते थे कि कुन्डलिनी की जागृति कोई शारीरिक केन्द्रों की जागृति नहीं है अपितु यह आत्मा में शिथिल उच्च गुणों की जागृति है।

विभिन्न चक्रों तथा सुषम्मना आदि को स्थूल शरीर के साथ मिला दिया गया है।

इससे पूर्व कि हम विषय को समाप्त करें, हम संक्षेप में कुछ तान्त्रिक एवं हठ योगियों के विचार बताना चाहेंगे जो इन चक्रों को कुछ शारीरिक केन्द्रों के साथ तथा सुषम्मना एवं अन्य नाड़ियों को कुछ रीढ़ की रस्सियों से मिलाते हैं। उनके अनुसार हमारी विभिन्न महत्त्वपूर्ण शक्तियां रीढ़ के मध्य भाग में सुषम्मना जिसे सरस्वती कहते हैं शरीर के निचले भाग से दिमाग के सबसे ऊपर के केन्द्रों तक चलती है। सुषम्मना के बाईं ओर ईडा नाम की दूसरी नाड़ी चलती है। इसे चन्द्र नाड़ी या यमुना भी कहते हैं। सुषम्मना के दाईं ओर सूर्य नाड़ी या गंगा चलती है। ये तीन नाड़ियां दोनों भौहों के मध्य स्थित एक बिन्दु पर मिलती है जहां चित्र में अजना चक्र को दर्शाया गया है। यह संगम त्रिवेणी या मुक्त त्रिवेणी कहलाता है, अर्थात् वह स्थान जहाँ तीनों नाड़ियां मिलती हैं, बिल्कुल उसी तरह जैसे भारत में इलाहाबाद में तीन नदियां मिलती हैं। ईडा और पिंगला नाड़ियां सुषम्मना के इर्द-गिर्द इस प्रकार घूमती हैं जिससे कि अंग्रेजी में लिखा गया 8 का आंकड़ा बन जाता है। इसमें तीनों को काटता हुआ भाग अजना चक्र पर होता है जैसा कि चित्र में दिखाया गया है। ये तीनों नाड़ियाँ तीन बार आपस में मिलती हैं, प्रथम, रीढ़ के नीचे वाले भाग में, द्वितीय, गर्दन में, और तृतीय, अजना चक्र अर्थात् भौंहों के बीच वाले स्थान पर। जिस स्थान पर मूलाधार है, वहां ईडा और पिंगला नाड़ियां सुषम्मना के मार्ग के साथ मिलती है, परन्तु एक सामान्य व्यक्ति में, ये धाराएं दूसरे जंक्शनों पर बिना एक दूसरे को स्थान दिए निकल जाती हैं, जैसा कि (चित्र १) में दर्शाया गया है। ऐसा विचार किया जाता है कि सामान्य व्यक्तियों में सुषम्मना के बीच का सारा मार्ग बन्द होता है। ऐसे लोगों में शक्ति केवल ईडा और पिंगला में चलती है। सुषम्मना का मार्ग शिथिल या लिपटी हुई कुन्डलिनी के कारण बन्द हुआ माना जाता है। हम यह स्पष्ट कर चुके हैं कि शरीर में ऐसे कोई स्थूल या व्यक्त रूप से चक्र नहीं हैं। ये अंलकारिक है। हमारा मुख्य भाव जो हम स्पष्ट करना चाहते हैं वह यही है कि आत्मा की शिथिल शक्तियों या गुणों को जगाना है और राजयोग यह कार्य पूरा करता है। जैसे राजयोग को 'ज्ञानयोग' 'बुद्धियोग', कहा जाता है, तो इस दृष्टिकोण से इसे 'कुन्डलिनी योग' भी कहा जा सकता है। परन्तु क्योंकि इस विषय में पहले से ही कुछ भ्रान्तियां हैं इसलिए इसे यह अलंकारिक नाम देना उचित न होगा। किन्तु यह अवश्य समझ लेना चाहिए कि राजयोग सारे शरीर को पुनः शक्ति प्रदान करता है, मन को शक्ति से भरपूर कर देता है और आलस्य को समाप्त कर देता है और यही लाभ कुन्डलिनी योग के भी माने जाते हैं। इस प्रकार, इसके द्वारा मनुष्य वास्तव में अपूर्व दिव्य बुद्धिमान बन जाता है क्योंकि उसकी आध्यात्मिक शक्तियां कई गुणा बढ़ जाती हैं।

परन्तु यहाँ एक सावधानी देना आवश्यक है। यदि कुन्डलिनी को शिथिल आध्यात्मिक शक्तियों व गुणों का प्रतीक नहीं समझा जाता, और यदि इसकी जागृति अर्थ आध्यात्मिक उन्नति तथा ज्ञान से नहीं लिया जाता तो शारीरिक दृष्टिकोण वाले कुन्डलिनी योग का राजयोग के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। निश्चित रूप से यह राजयोग का पर्यायवाचक शब्द नहीं है।

वो बूंद सूख जाएगी, अगर उसे सागर न बनाया

(ब्र० कु० अंजू, मुजफ्फरपुर, बिहार)

"अनेक मेरा मैला बनाता है, एक मेरा मैलेपन को समाप्त करता है।" वास्तव में इस कथन को सही रूप से जानकर और मानकर आगे बढ़ें, तो यह हमारे जीवन को ही नहीं बल्कि सारे विश्व को पावन, श्रेष्ठ, सुखी-सम्पन्न बना देगा। युवा वर्ग (Youth group) किसी विशेष जाति, धर्म, प्रान्त, रंग, भाषा के आधार पर नहीं बल्कि समस्त मानव जाति की विशेष अवस्था के आधार पर कहा जाता है। अतः अनेक विषमताओं के बावजूद भी हम एक हैं, एक थे, एक रहेंगे, ऐसा सोचकर कार्य करने वाला ही श्रेष्ठ बन सकता है। आज युवा पीढ़ी जाति, प्रान्त, धर्म आदि के नामपर अनेक खण्डों में विभक्त हो विशेष धर्म की रक्षा हेतु, विशेष एक समुदाय या देश की रक्षा हेतु संघर्ष कर रही है, उससे विश्व में शान्ति बढ़ने की बजाय घट रही है। एक समस्या का समाधान दूसरों के लिए दूसरी समस्या का रूप बनकर सामने आती है। उनकी समस्याओं को न तो आज की राजनीति ही सुलझा सकती है, न ही धर्म और न ही विज्ञान (Science)। धर्म (Religion) के नाम पर भी साम्प्रदायिक दंगे होना इसी बात का चिन्ह है। आंशिक रूप से सुलझती भी है तो दूसरों के लिए बाधा बनकर खड़ी हो जाती है। इन परिस्थीतियों में किसी भी प्रकार से ऐसा संभव नहीं हो सकेगा कि हम सभी भाषावादी, प्रान्तवासी, सभी जाति धर्म वालों को सन्तुष्ट करने या उनके हित को ध्यान में रखकर कार्य कर सकें। आज सारा संसार विभिन्नताओं से भरा पड़ा है। अनेक महत्वाकांक्षाओं से भरपूर लोग रह रहे हैं। अनेक आपसी झगड़े, ईर्ष्या, भेद-भाव आपको सर्व के हितकारी बनने नहीं देते। अतः विश्व प्रेम जागृत होने की आवश्यकता है। आपको किसी एक धर्म, समुदाय या देश पर कुर्बान नहीं होना है बल्कि विश्व पर कुर्बानी देनी है। इसके लिए आपको किसी 'एक' (One) का ही बनना होगा। लेकिन वो एक ऐसा हो, जिससे सारे संसार का सम्बन्ध हो, सर्व का कल्याणकारी (Benefactor) हो। ऐसा 'एक' सिवाय परमात्मा के दूसरा कोई नज़र नहीं आता। क्योंकि सारा जग तो स्वार्थी है।

"पहले तुम एक परमात्मा को अपना एकमात्र प्रेमपात्र मान लो, अनन्य भाव से उसी एक के हो जाओ। सर्व को एक पिता परमात्मा की सन्तान समझते हुए भाई-भाई की दृष्टि से देखो तो क्या होगा जानते हो ! एक परमात्मा ही जब आपका प्रेमपात्र होगा, हम उसके परवाने होंगे, दुनियां की हर चीज में हमें उसकी ही रचना दिखायी पड़ेगी, तो सभी चीजें, सभी मनुष्य हमें अति प्यारे लगेंगे। फिर तो सभी विकार भी स्वतः ही विदायी ले लेंगे। किसी भी कार्य में आपसी ईर्ष्या-द्वेश प्रकट होती है तो इसका मतलब है कि परमात्मा को पूर्ण रीति अपना नहीं बनाया है बल्कि परसेन्टेज में ही अपनाया है। परमात्मा विश्व कल्याणकारी है तो उनकी याद और स्नेह से विश्व कल्याण की भावना हमारे भी दृष्टि, वृत्ति, वाणी और कर्म में समा जायेगी। क्या फिर स्वप्न में भी किसी का अहित हमसे हो सकेगा ? फिर हम प्रभु पसंद, लोक पसंद बन जायेंगे। लेकिन पहले एक का ही प्रिय बनना पड़ेगा। ऐसा करने में हमें ये दुनिया बहुत बाधा डालेगी, लेकिन हाहाकार के बाद स्वतः ही जय-जयकार होगी। क्योंकि **"संघर्ष से प्राप्त जिन्दगी अति प्रिय होती है और मेहनत का फल अति मीठा होता है।"**

इसके लिए स्वयं के संकल्पों को चेक करना होगा। संकल्प के कई रूप हैं जैसे—याद, स्नेह, अनुभव, ज्ञान, विश्वास इत्यादि। तो क्या ये एक के प्रति हैं ? दुनियां का किसी प्रकार का आकर्षण हमें अपनी ओर खींचता तो नहीं ! जानते हो इस एकांकी प्रेम में 'ज़रा', 'मोह', 'ममता', 'निभाव' के लिए तनिक भी स्थान नहीं होता अतः परमात्मा की श्रीमत की पालना के समय अगर ये शब्द अपनी ओर से मिलाते (Add) हैं तो ये छोटे-छोटे शब्द जहर या दीमक का कार्य करेंगे जो आपको खोखला बनाकर किसी भी समय गिरा देंगे। जैसे **एक सैनिक को इसलिए जान देनी पड़ी कि उसे तपती गर्मी में भी पैरेड के बीच में पानी पीने की**

इजाजत नहीं मिली। तो ये जान देना उसका बलिदान कहा गया और इतिहास के स्वर्णाक्षरों में लिखा गया। वरना अपमानित होकर मरना कोई मरना है क्या ? मृत्यु तो कभी भी हो सकती है, फिर हम क्यों न अच्छा कर्म करें, दृढ़ता से, ताकि स्वयं का बलिदान औरों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बने !

प्रेम एक बीज है, उसका फल है विश्व प्रेम। **"जिस प्रेम को हमने विश्वव्यापी नहीं बना दिया वह निस्-सन्देह एक दिन खत्म हो जायेगा।** वो बूंद जो सागर नहीं बनी, वह किसी दिन खाक में मिल जायेगी ! तो देखा ! सर्व प्रति सदा शुभ भावना, शुभ कामना, स्नेह भावना न बने तो ये थोड़ा प्रेम उस पानी की बूंद या बीज की तरह नष्ट हो जायेगा। परमात्मा (God) का सम्बन्ध ही बेहद से है। वो बीज ही क्या जो फल नहीं देता। अतः विश्व के प्रति प्रेम जागृत न हो, ऐसे व्यक्ति का परमात्मा के प्रति प्रेम होना मात्र दिखावापन है या पहली स्टेज (Primary Stage) है।

गालिब ने तो कहा है—

"हर जान मेरी जान है, हर एक दिल है मेरा दिल। तो ये 'एक' मेरेपन का ही कमाल है। अतः उन्हीं के शब्दों में :—

"खाक का रिज्म है वह, कतरा जो दरिया न हुआ।"

दूसरी बात अनेक "मेरेपन" एक कंटीली दीवार बना देते हैं जो कि हमारी शुभ भावना, शुभ कामना को विश्व तक पहुंचने ही नहीं देते।

तो देखा ना सच्चे विश्व प्रेमी बनने का तरीका। सूर्य की किरणें एक सूर्य से ही निकलकर विश्व के कोने-कोने तक पहुंचती हैं, तभी प्रकाश और स्वास्थ्य, उष्मा दे पाती हैं। चांद, सूर्य पहले एक आकाश में स्थित हैं तभी विश्व के हर प्राणी उसे अपना कहते हैं, अपना लगते हैं। बीज एक जमीन को पकड़ता है तभी वृक्ष बनकर फल देता है।

**

वे यादें अब भी ताजा हैं !

ब्र. कु. राम ऋषि शुक्ल, लखनऊ

हम भक्तों को जब अनायास अपना प्यारा भगवान मिला
मां जगदम्बा की गोद मिली, ब्रह्मा-श्रीमुख से ज्ञान मिला
ब्रह्मा ने अपना वत्स बनाकर साज मनोरम साजा है।
वे यादें अब भी ताज़ा हैं।

साकार रूप में निराकर जब बोले यह मीठी वाणी—
"मीठे बच्चे ! प्यारे बच्चे ! आओ हे बच्चे रुहानी !"
प्रिय बाबा पर हम फिदा हुए, प्रिय बाबा पर हम नाज़ा हैं।
वे यादें अब भी ताज़ा हैं।

वे खेल-पाल के प्यारे दिन वे बचपन के न्यारे दिन
हां, खेल-खेल में मिलीं हमें रुहानी शिक्षाएं अनगिन
बाबा की उन शिक्षाओं से बन रहे रंक से राजा हैं।
वे यादें अब भी ताज़ा हैं।

भ्राता जगदीश जी की विदेश यात्रा का तिथि-क्रम

जगदीश भाई लगभग 20 देशों में ईश्वरीय सेवार्थ जा रहे हैं। उनकी विदेश-यात्रा का तिथि-क्रम निम्नलिखित है—

सितम्बर 1	न्यूयार्क पहुंचना	सितम्बर 24	कोलम्बया में कार्यक्रम	अक्तूबर 17	जर्मनी में आगमन
,, 2	बारबेडोज रवाना	,, 25	कोलम्बया ,, ,,	,, 19	जर्मनी फ्रैंकफर्ट में
,, 3	बारबेडोज	,, 26	मैक्सिको को प्रस्थान	,, 20	जर्मनी (कोलोग्न)
,, 4	ग्याना को प्रस्थान	,, 27	मैक्सिको में कार्यक्रम	,, 21/22	जर्मनी (हमबर्ग)
,, 5	गयान में कार्यक्रम	,, 28	मैक्सिको ,, ,,	,, 23/24	सवीडन (स्टाकहालम)
,, 6	गयाना ,, ,,	,, 29	सानफ्रंसिस्को रवाना	,, 25	जर्मनी (बर्लिन)
,, 7	सुरीनाम को रवाना	,, 30	सानफ्रंसिस्को में कार्यक्रम	,, 26	इन्गलैन्ड के लिये प्रस्थान
,, 8	ग्याना को वापसी	अक्तूबर 1	सानफ्रंसिस्कों में	,, 27	इन्गलैन्ड में कार्यक्रम
,, 9	ट्रिनिडाड को प्रस्थान	,, 2	सानफ्रंसिस्को में	,, 28	इन्गलैड ,, ,,
,, 10	ट्रिनिडाड में कार्यक्रम	,, 3	लास एजंलज़ को प्रस्थान	,, 29	इन्गलैन्ड ,, ,,
,, 11	ट्रिनिडाड ,, ,,	,, 4	लास एजंलज़ में कार्यक्रम	,, 30	इन्गलैन्ड ,, ,,
,, 12	न्यूयार्क के लिए प्रस्थान	,, 5	लास एजंलज़ ,, ,,	,, 31	इन्गलैन्ड ,, ,,
,, 13	न्यूयार्क में कार्यक्रम	,, 6	सान अन्टोसियो रवाना	नवम्बर 1	इन्गलैन्ड में
,, 14	न्यूयार्क ,, ,,	,, 7	सानअन्टोनियों में कार्यक्रम	,, 2	जर्मनी (फ्रैन्कफर्ट) में आगमन
,, 15	न्यूयार्क ,, ,,	,, 8	टेम्पा को प्रस्थान	,, 3	होलैन्ड (एम्सट्रडम)
,, 16	न्यूयार्क ,, ,,	,, 9	टेम्पा में कार्यक्रम	,, 4	बेलजियम (ब्रुसल्ज़)
,, 17	न्यूयार्क ,, ,,	,, 10	कोस्टारिका रवाना	,, 5/6	फ्रांस (पेरिस)
,, 18	न्यूयार्क ,, ,,	,, 11	कोस्टारिका में कार्यक्रम	,, 7	स्विटज़रलैन्ड (जिनेवा)
,, 19	रात्री को ब्राज़ील के लिये प्रस्थान	,, 12	कोस्टारिका ,, ,,	,, 8	स्विटज़रलैन्ड (ज्युरिच)
,, 19	ब्राज़ील में कार्यक्रम	,, 13	टोरन्टो को प्रस्थान	,, 9	फ्रांस (स्ट्रसबर्ग)
,, 20	ब्राज़ील ,, ,,	,, 14	टोरन्टो में कार्यक्रम	,, 10	जर्मनी
,, 21	,, ,, ,,	,, 15	टोरन्टो ,, ,,	,, 11	रोम के लिये रवाना
,, 22	,, ,, ,,	,, 16	यूरोप को प्रस्थान	,, 12/13	एथन्ज़ में
,, 23	कोलम्बया के लिये प्रस्थान				

(पृष्ठ ३२ का शेष)

आध्यात्मिक सेवा समाचार

कि युवावर्ग की सेवा के लिए कुराल, बहाड़ाझोला, खलीकोट आदि शहरों के स्कूल तथा कालेजों में प्रदर्शनी, प्रोजैक्टर शो तथा प्रवचनों के कार्यक्रम रखे गए, जिनके द्वारा हजारों आत्माओं ने लाभ उठाया।

पुरी :—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि उदयबट में बाबा माधवानंद जी की ओर से तीन दिन के लिए स्वधर्मा महासभा नामक विशाल आध्यात्मिक सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें बहुत बड़े साधु-विद्वान-पंडितों ने भाग लिया। इसी महासभा में ब्र० कु० निरुपमा ने प्रवचन किया और बताया कि कैसे स्वधर्म पालन तथा राजयोग के अभ्यास से सुधर्मा (देवता) बन सकते हैं। जिसके द्वारा ५००० आत्माएं प्रभावित हुईं। इसके अतिरिक्त जगन्नाथपुरी की रथयात्रा के उत्सव पर १० दिन के लिए विश्व शांति राजयोग प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसके द्वारा लगभग एक लाख आत्माओं को ईश्वरीय संदेश मिला।

आध्यात्मिक सेवा समाचार

—ब्र०कु० श्रीराम तथा ब्र०कु० सत्यनारायण, कृष्णा नगर देहली द्वारा संकलित

दीदी मनमोहिनी जी की दिव्य स्मृति में सार्वजनिक कार्यक्रम

विश्व के सर्व सेवाकेन्द्रों से समाचार प्राप्त हो रहे हैं। कि दीदी जी की दिव्य स्मृति में विशेष योग तथा भोग के कार्यक्रम हर सेवाकेन्द्र पर १३ दिन तक रखे गये। सतगुरूवार ११ अगस्त को एक सार्वजनिक कार्यक्रम का आयोजन भी प्रत्येक शहर के मुख्य स्थान पर किया गया। जिसमें दीदी जी के जीवन चरित्र पर तथा उनकी विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए, उनकी लगन तथा नियमितता पर भी स्पष्टीकरण दिया गया। उनके सम्पर्क में आने वाले कई प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने दीदी जी द्वारा प्राप्त शिक्षाओं एवं अनुभूतियों का भी स्मरण किया। सामूहिक योग तथा प्रसाद वितरण का भी कार्यक्रम चला- कुछेक समाचार इस प्रकार हैं :—

बम्बई :—गामदेवी सेवाकेन्द्र की ओर से समाचार मिला है कि ११ अगस्त को दीदी जी की दिव्य स्मृति में भारतीय विद्या भवन में एक सार्वजनिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें शहर के ६५० प्रतिष्ठित व्यक्ति उपस्थित थे। फेमीना पत्रिका की एडीटर बहन विमला पाटील दीदी जी के प्रेमयुक्त व्यवहार से काफी प्रभावित थीं—उन्होंने अपने भाषण में कहा कि दीदी जी के गुणों को सामने लाते हुए मुझे अनेक प्रेरणायें उस आदर्श मूर्ति से मिलती हैं, दीदी जी की मुखमुद्रा सदैव प्रसन्नचित और चमकती हुई थी जो कि आध्यात्मिक शक्ति के पराकाष्ठा की प्रतीक है। "जस्टिस प्रताप जी ने बताया कि दीदी जी से मेरा घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। उन्होंने विद्यालय के कारोबार की प्रशंसा करते हुए कहा कि दीदी जी एक कुशल कार्यकर्त्ता थीं। उनमें हर कारोबार व्यवस्थित और सुन्दर ढंग से चलाने की कला थी। मेजर धनीक जी ने भी दीदी जी के गुणों का स्मरण किया। ब्रह्माकुमारी बहनों ने उनके जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला। तथा प्रसिद्ध संगीतकार भ्राता ललितसोडा जी ने अपने गीत द्वारा सबको स्नेहविभोर कर दिया। अन्त में योग तथा प्रसाद वितरण का कार्य चला।

दिल्ली :—सतगुरुवार, ११ अगस्त को सायंकाल गांधी मेमोरियल हाल, प्यारे लाल भवन में दीदी जी के निमित्त सार्वजनिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। हाल में अभूतपूर्व शान्ति का वातावरण था, उसी अनुभूति के साथ दीदी जी की मुलाकातों को याद करते हुए आचार्य प्रभाकर मिश्र, सार्वभौम सनातन महासभा के प्रज़ीडेन्ट ने बहुत ही सुन्दर शब्दों में दीदी मनमोहिनी शब्द की व्याख्या दी-म-मनुष्यात्मक, न-नम्रता, मो-मोक्ष, हि-हर्ष नी-नीति। आपने कहा कि यह ५ चीजें प्रत्येक व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन के लिए आवश्यक हैं और पांचों ही बातें दीदी के पांच अक्षरों के नाम में निहित हैं, जो उन्हें प्राप्त थीं। जस्टिस जसवन्त सिंह जी ने कहा कि मुझे ऐसा नहीं लगता कि दीदी नहीं हैं, बल्कि ऐसा महसूस होता है कि दीदी इस हाल में ही विराजमान हैं।" अन्य कई वक्ताओं ने भी इस प्रकार अपनी मधुर स्मृतियां सुनाईं। दिल्ली जोन इन्चार्ज दादी गुलजार जी ने अव्यक्त वतन का सन्देश सुनाया।

अहमदाबाद :—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि मनमोहिनी दीदी जी के देहावसान के उपलक्ष्य में एक बहुत ही सुन्दर कार्यक्रम रखा गया जिसमें गुजरात हाईकोर्ट के जस्टिस, प्रसिद्ध साहित्यकार तथा अन्य विशिष्ट व्यक्तियों सहित लगभग २५० भाई-बहिनों ने भाग लिया। सभी ने दीदी जी के विशेष स्नेह एवं शिक्षाओं का अपना अनुभव सुनाया और भावभीनी श्रद्धांजली अर्पित की। इसके अतिरिक्त १५ अगस्त के अवसर पर मणिनगर सेवाकेन्द्र की बावला गीता-पाठशाला की ओर से पटेलवाडी के हाल में अनुभवयुक्त-प्रवचनों का कार्यक्रम रखा गया जिसमें बताया गया कि मानव को सच्ची स्वतंत्रता किस प्रकार प्राप्त हो सकती है।

अलीगढ़ :—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि प्रसिद्ध तीर्थ गंगोत्री में तीन दिन की आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई जिसमें भारत के अनेक प्रान्तों के तथा विदेशी ज्ञान पिपासू आत्माओं ने लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त नरौरा अटामिक पावर प्रोजैक्ट के टाऊनशिप क्लब हाल में चार दिन के लिए आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई जिससे वैज्ञानिक अधिकारियों सहित लगभग ३००० आत्माओं ने लाभ उठाया। निकटवर्त्ती स्थानों-पला, धनीपुर, व गोपालपुरी पर भी प्रदर्शनियां लगाई गईं।

भावनगर :—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि बडवा विस्तार तथा निर्मल नगर में 'शांति पथ प्रदर्शनी', राजयोग शिविर, प्रोजैक्टर शो, प्रवचन तथा शोभा यात्रा के कार्यक्रम रखे गए जिनके द्वारा हजारों आत्माओं को शिव पिता का दिव्य संदेश मिला।

कपूरथला :—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि वहां के सिद्ध बाबा जोधानाथ जी के डेरे में सन्यासियों के महायज्ञ में निमंत्रण पर दस दिन के लिए राजयोग प्रदर्शनी तथा राजयोग शिविर का आयोजन किया गया। दोपहर को माताओं का सतसंग भी रखा जाता था। एक दिन के लिए प्रोजैक्टर फिल्म भी दिखाई गई। शहर की अनेकानेक आत्माओं को ईश्वरीय संदेश मिला तथा लोगों के मन से भ्रान्तियां दूर हुईं।

भैरहवा (नेपाल) :—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि रूपन्देही जेल में २०० कैदियों को कर्मों की गहन गति और चरित्र निर्माण के बारे में शिक्षा दी गई। कई स्थानों व मन्दिरों में प्रवचन के कार्यक्रम भी रखे गए।

कानपुर :—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि ११ अगस्त को दीदी जी की पुण्य स्मृति के उपलक्ष्य में एक सार्वजनिक कार्यक्रम रखा गया, जिसमें लगभग ३०० विशिष्ट व्यक्तियों ने भाग लिया। सभी ने दीदी जी के प्रति अपने स्नेहयुक्त उद्‌गार श्रद्धान्जली के रूप में अर्पित किए।

नारायणपुरा (अहमदाबाद) :—सेवा केन्द्र द्वारा कन्याओं के लिए चलाए जा रहे आध्यात्मिक होस्टल का तृतीय वार्षिक उत्सव बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर उपस्थित गुजरात युनिवर्सीटी के वाइस चान्सलर शास्त्री जी ने संस्था के कार्यों की सराहना करते हुए कहा शिविर व भाषण तो दुनियां में भी बहुत होते हैं, परन्तु यहां पर अनुभव तथा आचरण ये दोनों महत्त्वपूर्ण बातें हैं।

मुजफ्फरनगर :—सेवाकेन्द्र की ओर से अग्रवाल पेपर मिल में आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई। यहां पर एक मेला लगता है जिसमें आस-पास के गांवों से आए हुए लगभग २५०० लोगों ने प्रदर्शनी से लाभ उठाया। इस प्रदर्शनी को द्वितीय पुरस्कार एक चाँदी का कप भी मिला।

बेलगांव :—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि जमखंडी शहर में ६ दिन के लिए मानव-दिव्यीकरण अध्यात्मिक मेले का आयोजन किया गया। प्रतिदिन शाम को चैतन्य देवियों की झांकी तथा ज्ञानयुक्त ड्रामा का आयोजन किया गया था। आसपास के गांवों से लोग खास देवियों की झांकी व मेला देखने आते थे। मेले से लगभग डेढ़ लाख लोगों ने लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त "राजयोग द्वारा आध्यात्मिक अनुभव" कार्यक्रम रखा गया, जिसमें माउंट आबू वी० आई० पी० शिवर में शामिल हुए १६ विशिष्ट व्यक्तियों ने अपने-२ अनुभव सुनाए, जिनसे बेलगाम के उपस्थित नागरिकों ने पूरा-२ लाभ उठाया।

भुवनेश्वर :—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि उड़ीसा की ग्राम गोष्ठी उन्नयन विभाग की उपमंत्री श्रीमति सरस्वती हेमबर्ग से व्यक्तिगत मुलाकात की गई, उन्हें ईश्वरीय संदेश, साहित्य एवं ल०ना० का चित्र भी भेंट किया गया। एक दिन प्रैस कान्फ्रैंस बुलाई गई, जिसमें दैनिक समाचार पत्रों के संवाद-दाताओं ने भाग लिया। दूसरे दिन युवावर्ग की मीटिंग बुलाई गई जिसमें युवावर्ग की सेवा तथा बापदादा की प्रत्यक्षता के प्लैन बनाए गए। इसके अतिरिक्त रिजनल कालेज कैम्पस के क्वार्टर में एक गीता-पाठशाला का उद्‌घाटन समारोह मनाया गया।

रोहतक :—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि गाँव सीवाना में तथा रोहतक की जगदीश कालोनी में आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई इसके अतिरिक्त गाँव विशान में भी प्रदर्शनी लगाई गई जिसके परिणाम स्वरूप वहां लगभग १५० महिलाओं का सतसंग होता है।

नारायणगढ़ (नेपाल) :—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि सी० आर० ओ० भ्राता रामकृष्ण पंत जी की अनुमति से जेल में प्रवचन का कार्यक्रम हुआ। इस जेल की

विशेषता यह थी कि यहां पर १० औरतें भी कैदी थीं। जेलर महोदय ने भविष्य में भी ऐसे प्रवचन करते रहने की आशा व्यक्त की।

कटक :—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि डा० निरंजन त्रिपाठी सेवाकेन्द्र पर पधारे। वे विदेश भ्रमण करके लौटे हैं, विदेश में ही उन्हें इस संस्था का परिचय मिला। वे राजयोग के सरल मार्ग से बहुत प्रभावित हुए हैं। इसके अतिरिक्त डॉ० योगमाया पटनायक तथा डॉ० महामाया पटनायक इन दोनों बहिनों की माता जी के शरीर अव्यक्त के १२वें दिन प्रोजैक्टर शो तथा प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया। रथयात्रा के अवसर पर कटक शहर में विश्वनवनिर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी द्वारा भी लगभग २००० आत्माओं को ईश्वरीय संदेश दिया गया।

इलकल (हुबली) :—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि यू० एस० ए० की यार्क युनिवर्सीटी के प्रोफेसर डा० हिरमलूर ने ईश्वरीय विश्व विद्यालय का अवलोकन किया। उन्होंने कहा कि आज के घनी आवादी और मशीनी युग की दुनियां में राजयोग जैसे साधनों द्वारा शांति प्राप्त करना आवश्यक हो गया है। वे यहां के त्याग, चरित्र, पवित्रता और अनुशासन से बहुत प्रभावित हुए।

धार (म० प्र०) :—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि यहां के आदि वासी क्षेत्र में विश्व-नवनिर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया, जिसके द्वारा लगभग १५०० आत्माओं को ईश्वरीय संदेश दिया गया। कई आत्माओं ने राजयोग शिविर से भी लाभ उठाया।

गोहाटी :—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि निकटवर्त्ती स्थान नलबड़ी की मारवाड़ी धर्मशाला में चार दिन के लिए विश्व नवनिर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। कई गणमान्य व्यक्तियों ने उद्घाटन समारोह में भाग लिया और प्रदर्शनी देखकर अपने २ विचार रखे। प्रतिदिन प्रातः तथा सायं के समय माताओं एवं कन्याओं का सत्संग भी रखा जाता था।

रांजी :—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि रथयात्रा के अवसर पर जगन्नाथ नगर एवं रातू में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिससे लगभग १०,००० आत्माओं को शिवपिता का दिव्य संदेश मिला। इसके अतिरिक्त दुर्गा मन्दिर में भी दो-दिवसीय आध्यात्मिक प्रदर्शनी रखी गई तथा सभी स्थानीय सिनेमा-घरों में समाचार-चित्र (News Reel) दिखाई गई।

बड़ौदा :—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि निकटवर्त्ती करजण गांव में एक प्राथमिक विद्यालय में आध्यात्मिक प्रदर्शनी रखी गई जिससे लगभग ३०० आत्माओं को ईश्वरीय संदेश मिला।

चलकेरे :—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि यहां पर हुबली जोनल मीटिंग का कार्यक्रम रखा गया, जिसमें लगभग ४० टीचर्स तथा १७५ सेवाधारी भाई-बहिन उपस्थित हुए, जिसमें सेवा के प्लैन बनाए गए। इसी के साथ ही तीसरा वार्षिक उत्सव भी मनाया गया जिसका उद्घाटन जिला अधिकारी चित्र दुर्गा ने किया। शहर में से शोभायात्रा भी निकाली गई। जिलाअधिकारी ने प्रभावित होकर कहा कि मैं अपने जीवन में पहली बार सुख-शांति एवं आनन्द का अनुभव कर रहा हूँ तथा उन्होंने सेवाकेन्द्र के लिए स्थाई जगह दिलाने की प्रतिज्ञा की।

मालवीय नगर (दिल्ली) :—सेवाकेन्द्र की ओर से निकटवर्त्ती खानपुर गाँवों में दो दिन के लिए शिवदर्शन प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इसके पश्चात् तीन दिन के लिए राजयोग शिविर रखा गया। प्रदर्शनी से लगभग १५०० आत्माओं ने लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त निकटवर्त्ती स्थान पुष्पविहार में मानव-उत्थान प्रदर्शनी तथा देवली गाँव में प्रोजैक्टर शो भी रखा गया।

शालीमार बाग (दिल्ली) :—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि निकटवर्त्ती शालीमार गाँव में आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई। माताओं के लिए विशेष सतसंग तथा योग शिविर रखा गया। इसके अतिरिक्त 'स्वर्ग की सीट' नाटक एवं आध्यात्मिक मनोरंजन तथा प्रवचनों का कार्यक्रम भी रखा गया।

बिरहामपुर :—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है

(शेष पृष्ठ २९ पर)

जगदीश चन्द्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश, सम्पादक, बी 9/19 कृष्णनगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा ग्रन्थ भारती, शाहदरा दिल्ली-32 से छपवाया, Regd. No. 10563/65-D, (E)—70